आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर. / 2000 / 2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र. / भोपाल / 44 / 2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' मई 2024

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 40
मूल्य : 20 / –

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –25 | अंक–05 | बैशाख – ज्येष्ठ मास | मई 2024

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.
माँ का प्यार अमूल्य और
मेहनत अद्वितीय है।
माँ.... अनमोल है यह शब्द!
माँ. यह शब्द में छिपा होता है बहुत सारा प्यार, आत्मीयता और अपनापन की मिठास.
माँ ही दूसरा नाम है संवेदना और भावना का.
माँ एक एहसास है जो जिंदगीभर हमारे साथ रहता है, एक प्रतीक है, त्याग, बलिदान एवं ममत्व का.
माँ का ऋण उतारना नामुमकिन है.
हम रेखा गैस एजेंसी की तरफ से हर माँ के शुक्रगुजार है,
जो उसके परिवार को, समाज को और दुनिया को बेहतरीन बनाती है.
हम उसका काम आसान करने के लिए समर्पित है.
हर माँ को हमारी शुभकामनाएँ!
हैप्पी मदर्स डे!
रेखा गॅस एजन्सी
दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495. | rekhagas20032003@rediffmail.com
malhar.org

प्रथम पुण्यतिथि

श्री संजीव चतुर्वेदी

25.06.1961 - 15.04.2023

श्रद्धावनत

डॉ. नूपुर
डॉ. शिशिर - डॉ. संगीता
डॉ. देवेश - डॉ. शिवानी
ऋत्विक - राशी
सात्विक
शाश्वत
वेंकेटेश - शुभांगी
गौरी
कबीर
मल्हार

मिथिलेश - सुषमा
राजेश नमिता
भुवनेश
मुकेश - वंदना
तन्मय - रीना
एवं समस्त चतुर्वेदी परिवार

(र.क्र. 2174)

।। श्याम बाबा की जय ।।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ ...

बद्रीलाल
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

अनाज, तिलहन एवं वनोपज के व्यापारी एवं कमीशन एजेण्ट

संबंधित फर्म : श्यामबाबा ट्रेडर्स, कटंगी

जितेन्द्र अग्रवाल
98937 46909
94243 79909

बसंत अग्रवाल
98937 46911
8770915424

Lakh

Amchur

Chana

Mahua

बालाघाट रोड, कटंगी, जि. बालाघाट (म.प्र) ४८१४४५

(र.क्र. 2181)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	6
संपादकीय	7
जय माता महाविद्या	8
जय मां चर्चिका देवी	10
कुलदेवी श्री चर्चिका देवी	12
एकादशी व्रत का महत्व	14
चतुर्थी और महत्व	17
कुलदेवी महाविद्या शक्तिपीठ, मथुरा	20
सार्वजनिक विनम्र अपील	22
होली मिलन	23
आश्रय	31
दही का सही उपयोग	33
गया श्राद्ध पद्धति	34
गया यात्रा सम्बन्धी जानने योग्य आवश्यक बातें	35
समाज समाचार	36
बिछड़े स्वजन	36

अंक 05
मई 2024, वर्ष - 25

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक
श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
1029229@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

।। अपनों से अपनी बात।।

● उषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

मिलते रहिये सबसे
किसी ना किसी बहाने से
रिश्ते मजबूत बनते हैं
दो पल साथ बिताने से

आदरणीय
बन्धुवर/, भगनी
पालागन

चैत्र के नवरात्रि मैं हम सभी लोगों ने मां दुर्गा की पूजा अर्चना की, हमें एक नई ऊर्जा का अहसास भी हुआ। माता के भजनों और लांगुरिया का आनंद भी उठाया

अक्षय तृतीया

इसी माह में होने वाली है। हम सब उसका भी लाभ प्राप्त करेंगे ताकि हमारी आंतरिक ऊर्जा और सोच सबल हो।

होली एवं नवरात्रि दोनों ऐसे ही उत्सव थे जिसमें सबसे मुलाकात होती है। होली मिलन के कार्यक्रम हमारे समाज के अभी भी हो रहे हैं। होली मिलन समारोह में मेरा मुंबई का प्रवास हुआ अपने बंधु और भगिनियों के उत्साह और प्रेम से मैं अभिभूत हूं । मुंबई शाखा सभा के द्वारा अन्नपूर्णा योजना के लिए पर्याप्त राशि प्रदान करने की घोषणा ने मेरे हृदय को प्रफुलित कर दिया । इसके पूर्व गुरुग्राम एवं साहिबाबाद में भी मेरा प्रवास होली मिलन में हुआ । होली गायन में महिलाओं की भागीदारी ने विशेष रूप से प्रभावित किया। मैं विशेष कर मुंबई के श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संरक्षक आदरणीय आर 'आर. चतुर्वेदी आदरणीय विवेक जी आदरणीय पंकज जी सम्माननीय मधुपम जी

का हार्दिक आभार एवं साधुबाद व्यक्त करतीहूँ ।यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है की नई पीढ़ी हमारी संस्कृति धरोहर को सुरक्षित रखने में कामयाब हो रही है।

एक महत्वपूर्ण सूचना आप लोगों को दे रही हूँ जो प्रतिक्षित थी महासभा का अधिवेशन मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में संपन्न करने का निर्णय हुआ है। दिनांक 15 एवं 16 जून 2024। एक माह पूर्व आपको सूचना दे रही हूँ। आप सभी अपना आरक्षण करा ले तथा असुविधा से बचे। एक बात बहुत आवश्यक है पत्रिका में रजिस्ट्रेशन फॉर्म भी प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें आप आने का रजिस्ट्रेशन कर लें आयोजन करताओं को इससे बहुत सुविधा प्राप्त होगी इस कार्य में आप लोगों की महती सहयोग की आवश्यकता है। आप लोग पधारे एवं अधिवेशन को सफल बनाएं।

सालों से दूर रहे अपने सहपाठी अपने मित्र अपने रिश्तेदार से मीठी मुलाकात का अवसर है।

मेरा अपनी बहनों से भी आग्रह है कि वह अपनी सांस्कृतिक धरोहर अपनी परंपरा एवं पारंपरिक गीतों का गाने का अवसर नहीं छोड़े। तथा उन्हें जीवित रखें। यह भी ठीक है हमें अपने समय के साथ चलना है लेकिन समय के साथ चलने के कारण हम अपनी जमीन तथा जड़ों से दूर ना हो।

इस बीच में हमारे बहुत से बंधुवर कि एवं भगनी हम लोगों से बिछड़ गए। उनको मैं स्वयं अपनी ओर से एवं महासभा की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। अक्षय तृतीया की ढेर सारी शुभकामनाएं और बधाई।

अगले माह आपसे फिर मुलाकात होगी आपके विचार और सुझावों से अवगत होगे ताकि हमारे लाखों हाथ मिलाकर समाज के इस गोवर्धन पर्वत को उठा सकें।

बहुत-बहुत धन्यवाद जय समाज जय संगठन

संपादकीय

आज हमारा समाज भयंकर उथल पुथल से गुजर रहा है। जो ताकतवर है वो अपने स्वार्थजनित मूल्य व मर्यादायें सभी पर थोपने में लगा है। हमारी नैतिकता उनकी अनैतिकता बन गई है। हर हमले से लड़ना संभव नही है। इसलिए हमें चुनना है कि किन मुद्दों पर हमें लड़ना है और किन मुद्दों को छोड़ देना है।

आपका दिन शुभ और समय अनुकूल हो

समय को चलने के लिए किसी घडी की टिक टिक की जरुरत नहीं होती है। वो तो निर्बाध चलता है। हम उनके साथ नहीं चल पाये या अंदर बहार की दुनिया पर अपनी छाप नहीं छोड़ पाये तो यह हमारी समस्या है। समय को दोष देना अपनी अकर्मण्यता को छुपाना है।

दिनाँक 26 मई 2006 को महाविद्या देवी मंदिर का वर्तमान स्वरूप दे कर जीर्णोद्धार किया गया। इस कार्य हेतु लगभग एक करोड़ रुपये महासभा द्वारा व्यय किये गए।

अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत समाज सहयोग हेतु राशि समाज हित में हितार्थीयों को आप सभी के सहयोग से प्रदान किये जा रहे है। इस हेतु सूची वर्तमान में प्रकाशित की जा रही है।

महासभा से संबंधित हेतु वर्तमान कार्यकाल के अंतर्गत नवीनीकरण किया जा रहा है। आप सभी बांधवों से निवेदन है कि महासभा की वर्तमान समय में संबद्धता का नवीनीकरण उचित शुल्क जमा कर शीघ्र कराने की कृपा करें।

नई सदस्यता हेतु सदस्यता फॉर्म, महासभा के आगामी अधिवेशन के उपरांत प्रकाशित किया जाएगा।

समाज मे अनेक शहरों में होलीमिलन का कार्यक्रम उत्साह व धूमधाम से आयोजित किया। इसमें होलीगायन के कार्यक्रम में समाज की महिलाओं व पुरुषों ने बढ़ चढ़ का भागीदारी की। इसमें भदावर के हमारे ग्राम पुरा, होलीपुरा, तालगांव, पिनाहट, फरौली, (चंद्रपुर, कमतरी, कछपुरा) में कैमर बाबा पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अलावा गुरुग्राम,गाजियाबाद, भोपाल, फरीदाबाद, नोयडा, लखनऊ, कानपुर, आगरा, दिल्ली, बरेली, मुंबई सहित अनेक स्थानों में आयोजित किया। सभी होलीमिलन कार्यक्रमों में नव निर्वाचित सभापति का स्वागत, अभिनंदन किया गया। सभी आयोजनों का यथासम्भव कवर करने का प्रयास किया गया है। जिसमें बैंगलौर, हैदराबाद, नोयडा आदि शहर शामिल हैं।

लोकतंत्र के महत्वपूर्ण उत्सव के उपरांत दिनाँक 15-16 जून 2024 श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का आम सम्मेलन भोपाल में आयोजित किया जायेगा। इसमें समाज के लोग अनेक बड़े बड़े विषयों पर मंथन व चिंतन करेंगे। 2 दिन का यह आयोजन में नव निर्वाचित सभापति की नई कार्यकारिणी का गठन भी किया जाएगा।

समाज की निर्वाचित प्रथम महिला सभापति की अपनी कार्यकारिणी का चयन किया जायेगा। इसमें समाज सेवा महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित की जायेगी व महिलाओं की भागीदारी में बढ़ोतरी की भी संभावना है।

जय माता महाविद्या

- **चित्रा दिलीप चतुर्वेदी**, भोपाल

माँ महाविद्या के नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें कई शक्तियों का समावेश है।

दिवयोवेरताम सः मनस्वितः संकलाम ।।

त्रयी शक्ति ते त्रिपुरे घोरा छिन्मस्तिके च।

देवी,अप्सरा,यक्षिणी ,डाकिनी ,शाकिनी और पिशाचिनी आदि में सबसे सात्विक और धर्म का मार्ग है देवी कि पूजा,साधना और प्रार्थना करना। कैलाश पर्वत के ध्यानी की अर्धांगिनी सती ने दूसरा जन्म पार्वती के रूप में लिया था। इनके दो पुत्र हैं गणेश और कार्तिकेय। माँ पार्वती अपने पूर्व जन्म में सती थी। नौ दुर्गा भी पार्वती का ही रूप है। माता सती की पूजा आराधना करना सनातन धर्म का मार्ग है।

पुराणों के अनुसार जब शिव की पत्नी सती ने दक्ष के यज्ञ में जाना चाहा। तब शिवजी ने माता को वहां जाने से मना कर दिया। इंकार पर क्रोधवश माता ने पहले काली शक्ति प्रकट की। फिर दसों दिशाओं में दस शक्तियां प्रकट कर अपनी शक्ति की झलक दिखा दी। इस अति भयंकर दृश्य को देखकर शिवजी घबरा गए और पुछा कौन हैं ये? क्रोध में सती ने कहा ये सभी मेरी शक्तियां हैं। मैं यज्ञ में जाऊंगी और अपना हिस्सा लेकर आऊँगी अथवा वहां विध्वंस करके आऊँगीं। शिवजी के बार बार पूछने पर माता ने बताया ये सभी मेरे रूप हैं।

कहीं कहीं 24 विद्याओं का भी वर्णन आता है। किन्तु विश्व की प्राचीन आगम तंत्र के अनुसार दस महाविद्या की साधना का उल्लेख है। इनकी साधना दो कुलों के रूपों में की जाती है। 1) श्री कुल और 2) काली कुल ।

कुछ ऋषियों ने इन्हें 3 रूप मैं माना है।

1) उग्र 2) सौम्य और 3) सौम्य उग्र ।

उग्र में काली, छिन्न मस्ता, धूमावती और बगुलामुखी हैं। सौम्य में त्रिपुरासुंदरी, भुवनेश्वरी, मातंगी और महालक्ष्मी हैं। तारा तथा भैरवी को उग्र तथा सौम्य दोनों माना गया है।

महाविद्या देवी दुर्गा के दस रूप हैं,जो अधिकांश तांत्रिक साधकों द्वारा पूजे जाते हैं। परन्तु साधारण भक्तों को भी अचूक सिद्धि प्रदान करते हैं। दस महाविद्या विभिन्न दिशाओं में वासित शक्तियां हैं। माँ दुर्गा के इन 10 महाविद्याओं की साधना करने वाला व्यक्ति सभी भौतिक सुखों को प्राप्त कर जनम–मरण से मुक्त हो जाता है। माँ को प्रसन्न करने के लिए तांत्रिक साधकों द्वारा यह पूजा की जाती हैः

1. **माता काली** : दसों महाविद्याओं में काली को प्रथम रूप माना जाता है। राक्षसों का वध करने के लिए माता ने यह रूप लिया था। सिद्धि प्राप्त करने के लिए माता के इस रूप के पूजा की जाती है। माता की पूजा करने वाला साधक एकनिष्ठ और पवित्र मन का होना चाहिए। देवताओं और दानवों के युद्ध में माँ काली ने ही देवताओं को विजय दिलवाई थी। कोलकाता, उज्जैन और गुजरात में माँ काली के जागृत और चमत्कारी मंदिर हैं। इनकी

पूजा के लिए विशेष दिन शुक्रवार और अमावस्या होता है। ऐसी धारणा है जो व्यक्ति अमावस्या को काली माँ के दर्शन करता है माता उसके ऊपर से दुष्ट ग्रहों की छाया खींच लेती हैं।

2. **माँ तारा** : यह तांत्रिकों की मुख्य देवी हैं। देवी के इस रूप की आराधना करने पर आर्थिक उन्नति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। पश्चिम बंगाल के बीरभूम में तारापीठ है। इसी स्थान पर देवी तारा की उपासना महर्षि वशिष्ठ ने की थी और तमाम सिद्धियां हासिल की थी। तारा देवी का दूसरा मंदिर हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में स्थित है। परेशानियों को दूर करने के कारण इन्हें माँ तारा कहते हैं।

3. **त्रिपुर सुंदरीः** इन्हें ललिता, राज राजेश्वरी और त्रिपुर सुंदरी भी कहते हैं। त्रिपुर सुंदरी की शक्तिपीठ त्रिपुरा में स्थित है। यहाँ पर माता की चार भुजा और तीन नेत्र हैं। नवरात्री में रुद्राक्ष की माला पर इनका जाप किया जाता है।

4. **भुवनेश्वरी** : पुत्र प्राप्ति के लिए माता भुवनेश्वरी की आराधना फलदायी मानी जाती है। यह शताक्षी और शाकम्भरी के नाम से भी जानी जाती हैं। इनकी आराधना से सूर्य के सामान तेज ऊर्जा की प्राप्ति होती है और जीवन में मान सम्मान मिलता है।

5. **छिन्नमस्ता** : इनका स्वरुप कटा हुआ सर और बहती हुई रक्त की तीन धाराओं से सुशोभित रहता है। इन महाविद्या की उपासना शांत मन से करने पर इनके शांत रूप के दर्शन होते हैं। और उग्र मन से उपासना करने पर उग्र रूप के दर्शन होते हैं। ये संतान प्राप्ति, दरिद्रता निवारण, काव्यशक्ति, लेखन आदि तथा कुण्डलनी जागरण के लिए भजि जातीं हैं। इनका मंदिर झारखण्ड के रांची में स्थित है।

6. **भैरवी** : भैरवी की उपासना से व्यक्ति सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त हो जाता है। इनकी पूजा से व्यापार में लगातार वृद्धि और धन सम्पदा की प्राप्ति होती है। यह बंदी छोड़ माता भी कहलाती हैं। इन्हें षोडशी भी कहा जाता है। षोडशी को श्री विद्या भी कहा जाता है। जीवन में काम, सौभाग्य, शारीरिक सुख और आरोग्य सिद्धि के लिए इन देवी की उपासना की जाती है। षोडशी का भक्त कभी दुखी नहीं रहता।

7. **धूमावती** : माता घूमावती का कोई स्वामी नहीं है। अतः ये विधवा माता मानी जाती हैं। इनकी साधना से आत्मबल का विकास होता है। इस महाविद्या के फल से देवी सूकरी के रूप में प्रत्यक्ष प्रकट हो कर साधक के सभी रोग,अनिष्ट और शत्रुओं का नाश कर देती हैं। माँ घूमावती महाशक्ति स्वयं नियंत्रिका हैं। ऋग्वेद और रात्रिसूत्र में इन्हें सूत्रा कहा गया है। इन्हें आभाव और संकट दूर करने वाली माँ कहा गया है।

8. **बगुलामुखीः** इन माता की आराधना युद्ध में विजयी होने और शत्रु नाश के लिए की जाती है। इनकी साधना सप्तऋषियों ने समय समय पर की है। इनके साधक का जीवन निष्कंटक और लोकप्रिय हो जाता है। भारत में देवी बगुलामुखी के तीन ही मंदिर माने गए हैं जो दतिया, कांगड़ा एवं शाजापुर में हैं।

9. **मातंगी माताः** मतंग शिवजी का नाम है। शिव की यह शक्ति असुरों को मोहित करने वाली और साधकों को अभिष्ट फल देने वाली है। गृहस्थ जीवन को सफल बनाने के लिए लोग इनकी पूजा करते हैं। अक्षय तृतीया अर्थात वैशाख शुक्ल की तृतीया पर इनकी जयंती आती है। यह श्याम वर्ण और चन्द्रमा की मस्तक पर धारण करती हैं। इनकी चार भुजाएं, चार वेद हैं। माँ मातंगी – वैदिकों की सरस्वती।

10. **कमलाः** यह माता दरिद्रता, संकट, गृह कलह और अशांति को दूर करती हैं। यह माता परम सौभाग्य प्रदात्री हैं, जो जातक इनकी आराधना करता है। उसका घर यह धन–धन्य से परिपूर्ण करती हैं। कमल के पुष्प पर आसीन होने के कारण इनका नाम कमला पड़ा है। कमला यानि लक्ष्मी माता को प्रकाश प्रिय है और अँधेरे से नफरत है। यह स्वयं नारायणी हैं और भगवन विष्णु के साथ भ्रमण करती हैं। यह प्रसन्न होती हैं तो तिजोरी भर देती हैं, नाराज़ होती हैं तो अपनी माँ अलक्ष्मी के साथ रंक भी बना देती हैं। लक्ष्मी माँ की आराधना तीनों लोकों में दानव, दैत्य, देवता तथा मनुष्य सभी करते हैं।

माता मंत्रः

1) काली माँः ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके स्वाहा ।
2) तारा माँ : ॐ ह्रीं स्त्रीं हुम फट ।
3) त्रिपुर सुंदरीः ॐ ह्रीं श्रीं त्रिपुर सुन्दरियै नमः ।
4) माँ भुवनेश्वरीः ह्रीं भुवनेश्वर्यै ह्रीं नमः।
5) भैरवी माँः ह्रीं भैरवी क्लौं ह्रीं स्वाहा ।
6) छिन्नमस्तिकाः श्रीं ह्रीं ऐं वज्रा वैरोचनिये ह्रीं फैट स्वाहा।
7) माँ घूमावती : ॐ धूं धूं धूमावती देव्यै स्वाहा।
8) माँ बगुलामुखीः ॐ ह्रीं बगुलामुखी देव्यै ह्रीं ॐ नमः।
9) देवी मातंगीः ॐ ह्रीं ऐ भगवती मातंगेश्वरी श्रीं स्वाहा।
10) माँ कमलाः हसौ जगत प्रसूतये स्वाहा।

ये चमत्कारी मंत्र सिर्फ जानकारी के लिए ही लिखे हैं। पाठक किसी जानकर से पूछकर ही दस महाविद्याओं का जाप या पूजन करें।

जय माँ महाविद्या

जय मां चर्चिका देवी

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

चर्चिका नाम का अर्थ बेहद विशिष्ट है। चर्चिका नाम का अर्थ भगवान शिव की तीसरी आँख की शक्ति होता है। ऐसी मान्यता है की यदि कोई व्यक्ति अपने बच्चे का नाम चर्चिका रखता है तो उस बच्चे का व्यक्तित्व भी चर्चिका नाम के मतलब की तरह यानी भगवान शिव की तीसरी आँख की तरह शक्तिशाली हो सकता है। जीवन में नाम और उसके मतलब का बहुत महत्व होता है। नाम का मतलब बच्चों को एक सकारात्मक प्रयास करने को प्रेरित करता है। भारतीय संस्कृति अपने आप में एक अनूठी संस्कृति है। इस संस्कृति में हमें अपने कई कुल देवी देवताओं के होने की जानकारी मिलती है। हमारा माथुर चतुर्वेदी समाज भी इन जानकारियों से अनभिज्ञ नहीं है। चौबों में माँ चर्चिका देवी को पांडों (भारद्वाज गोत्र) की देवी मानते हैं। माँ महाविद्या देवी तो शेष सभी लोगों की हैं। माँ चर्चिका देवी को प्रणाम कर हम चर्चा करते हैं,मथुरा में विराजित माँ चर्चिका देवी की।

1. **श्री मथुरा पुरीः** चर्चिका देवी मंदिर दसवतार गली, विश्राम घाट के आगे, सती बुर्ज के निकट स्थित है। इस मंदिर को समय समय पर, खासकर त्योहारों पर विभिन्न प्रकार के फलों से सजाया जाता है। इसके निकट दशवतार का प्रसिद्ध मंदिर भी है। चर्चिका माता मंदिर में साल में कई बार सवा मन प्रसाद का भोग लगाया जाता है। पुराणों के अनुसार चर्चिका देवी का प्रादुर्भाव शिव जी के तीसरे नेत्र से हुआ है। इनका इतिहास चमत्कारिक घटनाओं से परिपूर्ण है। राजा हर्षवर्धन और इन्द्रधुम्न ने इस मंदिर में माता रानी की पूजा अर्चना की थी। धार्मिक ग्रंथों में चर्चिका माता को शमशानवासिनी भी बताया गया है।

2. **चर्चिका मंदिर, उड़ीसा :** यह सबसे पुराने शाखा स्थानों में से एक है। यह उड़ीसा के कटक जिले के बंकी कस्बा में स्थित है। सिद्ध देवता एक आठ शस्त्र देवी चामुंडा हैं। जिन्हें स्थानीय रूप से माँ चर्चिका के नाम से जाना जाता है। यह एक दैत्य मानव शरीर पर बैठती हैं। मानव मुंडों की माला पहनती हैं। वह अपने चार दाहिने हाथों में खडग, शूल, कटारी और वरदमुद्र दिखती हैं, जबकि अपने चार बाएं हाथों में कटे हुए सर, रक्तकंप बाँधु का प्रतिनिधित्व करते हैं और शेष हाथ एवं उँगलियाँ रक्त में डूबी रहती हैं। 19वी शताब्दी में मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। ऐसा माना जाता है कि चर्चिका माँ की मूर्ती परशुराम ने बनायीं थी। इस मंदिर की छत लकड़ी से बनी है, जबकि खम्बे पत्थर के बने हैं। इस पूजा मंडप कि छत को बड़े पैमाने पर नक्काशीदार बनाया गया है। मंडप की लकड़ी से बनी छत को हाथियों, बतख, तोता, मोर आदि पक्षियों और जानवरों की चित्र शैली से सजाया गया है। इसके आलावा यहाँ चार सशस्त्र महिषासुर, मर्दानी दुर्गा और उत्तर पश्चिम दक्षिणी ओर क्रमशः आठ सशस्त्र चामुंडा को स्थापित किया है। ऐसी मान्यता है कि एक भक्त ने रेणुका नदी के पास माता चर्चिका कि पूजा करने के बाद उन्हें यहाँ एक मंदिर बना कर उसमें स्थापित कर दिया। उस भक्त ने देवी को स्थापित करने से पहले उनके सभी गहने,आभूषण आदि उतार लिए थे। जिससे माता क्रुद्ध हो गयीं थीं और रेणुका में बाढ़ के कारण मंदिर का स्थान कम हो गया। यह मंदिर बंकी के दिल में स्थित है। दुर्गा पूजा (नवरात्री-दशहरा) का समय मंदिर जाने के लिए अच्छा है। अक्टूबर का महीना यहाँ घूमने और पूजा करने के लिए उपयुक्त है। दूर दराज़ के लोग यहाँ पूजा अर्चना और दर्शन करने आते हैं। शरद पूर्णिमा भी यहाँ प्रसिद्ध त्यौहार में से एक है।

3. **चर्चिका माँ विदिशा/भेलसा :** विजय मंदिर, विदिशा,

मध्य प्रदेश में स्थित है। किले की सीमा के अंदर पश्चिम में स्थित इस मंदिर के नाम पर ही विदिशा का नाम भेलसा पड़ा।सर्वप्रथम इसका उल्लेख सन 1024 में महमूद गजनी के साथ आये विद्वान अलबरूनी ने किया है। अपने समय में यह स्थान विशाल मंदिरों में से एक माना जाता था। साहित्यिक साक्ष्यों के अनुसार यह आधा मील लम्बा चौड़ा था। इस मंदिर की ऊंचाई 105 गज थी। मंदिर के कलश दूर से ही दिखते हैं। यहाँ साल भर यात्रियों का तांता लगा रहता है,और साल भर माता की पूजा-अर्चना चलती है।कहा जाता है इस मंदिर का निर्माण चालुक्य वंशी राजा कृष्ण के प्रधानमंत्री वाचस्पति ने अपनी विदिशा विजय के उपरांत किया था। नृपति के सूर्यवंशी होने के कारण मेल्लिस्वामिन (सूर्य) का मंदिर भी यहाँ बनवाया गया | इस मेल्लिस्वामिन नाम से इस जगह का नाम पहले भेलसानी और बाद में भेलसा पड़ा | यह मंदिर अपनी भव्यता और विशालता के कारण ही मुस्लिम शासकों की आँखों में खटकता रहा। कई बार उन्होंने इसे लूटा और तोड़ा परन्तु हर बार श्रद्धालु इसे बनवा कर पूजा योग्य कर देते थे।

इस स्थान के शिलालेख ज्यादातर आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिए। स्तम्भ पर मिला एक संस्कृत का अभिलेख यह स्पष्ट करता है कि यह मंदिर चर्चिका देवी का था। संभवतः इसी देवी का दूसरा नाम विजया था। जिसके नाम से इसे विजय मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह नाम बीजा मंडल के रूप में आज भी प्रसिद्ध है। कहीं कहीं मतभेद है कि बृजभूमि तो राधा-कृष्णा कि भूमि है । यहाँ तो कृष्णा पूजा सर्वत्र है। यहाँ कृष्णा जन्म के पहले ही शक्तिपूजा आरम्भ हो चुकी थी। मुख्यतः वैष्णव धर्मावलम्बी बृजवासी, देवी कि आराधना करते हैं। भगवती दुर्गा ने सप्तशती में स्वयं कहा है नन्द गोप गृहे जाता मैं स्वयं नन्द गोप के घर में यशोदा के गर्भ से अवतार लूंगी। माता भगवती का ब्रज से जुड़ाव आत्मीय है, क्यूंकि ब्रज स्वयं ही भगवती का प्रादुर्भाव स्थल है। मांगलिक कार्य में और गौर पूजा का विधान है। यह गौर ही गौरा पार्वती हैं। चर्चिका देवी को कहीं कहीं परमारों कि कुल देवी बताया गया है। यहाँ तक कहा जाता है, विदिशा में चर्चिका माँ की मूर्ति कि स्थापना परमारों ने ही करवाई थी।

अब वो मूर्ती शायद खंडित हो चुकी है। एक मान्यता के अनुसार यह देवी भगवान की भी मति फेरने कि क्षमता रखती हैं। माता चर्चिका नारी शक्ति कि प्रतिरूप हैं और यह शक्ति मात्र उनके प्रचंड चंडी के रूप में ही नहीं, मां के कोमल हृदय और पवित्रता के बहते आंसुओं के रूप में भी दिखती हैं। कुछ मतों के अनुसार चामुंडा देवी का रूप ही चर्चिका देवी हैं जो देवियाँ हमारे शरीर के विभिन्न भागों कि रक्षा करती है उनमें उल्लेख मिलता है। माँ चर्चिका देवी हमारे ओठों कि रक्षा करें। उड़ीसा के चर्चिका देवी मंदिर के बारे में यह मान्यता है कि यहाँ तंत्र-मंत्र क्रियाएं भी कि जाती हैं। मां शब्द ही अपने आप में त्याग, बलिदान और ममता से परिपूर्ण है। कभी मुसीबत का समय हो तो आप भी देवी मां को श्रद्धा से मदद के लिए पुकारें। माता आपकी मदद के लिए शीघ्र दौड़ी चली आएँगी।

जय मां चर्चिका देवी

श्री कुलदेवी महाविद्या, मथुरा जीर्णोद्धार दिवस 26 मई 2006

महाविद्या के जीर्णोद्धार दिवस को प्रति वर्ष २६ मई को मनाया जाय एसा विचार आया है। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति श्री केदार नाथ चतुर्वेदी होलीपुरा के कार्यकाल में श्री महादेवी महाविद्या मंदिर के वर्षों से चली आ रही जीर्णोधर की आवश्यकता को समझते हुए, महासभा की कार्यकारिणी ने प्रस्ताव पारित कर, इस जीर्णोद्धार कार्यक्रम को प्रारंभ किया गया । इस पुनीत जीर्णोद्धार कार्य के लिए आदरणीय, डॉ सतीश चंद्र जी श्री महेश पाठक तथा श्रीं त्रिभुवन जी अनुमानित १ करोड़ से ज़्यादा रुपये का सहायोग प्रदान किया। २६ मई २००६ को जीर्णोद्धार के लिए नींव की स्थापना के बाद, निर्माण कार्य लगभग दो वर्ष में संपूर्ण हुआ। महाविद्या देवी के मंदिर की जीर्णोधर की नींव स्थापना कार्यक्रम के लिए दद्दा केदार नाथ जी पूर्व सभापति, डॉ सतीश जी, मथुरा के वरिष्ठ समाज सेवक श्री महेश पाठक जी, श्रीं त्रिभुवन जी CA, श्रीं भरत जी, सभापति श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, डॉ प्रदीप जी मंत्री, श्री राकेश जी कोषाध्यक्ष, डॉ के एन चतुर्वेदी, श्री अशोक जी, श्री मुनीन्द्र नाथ आदि के साथ तमाम अन्य चतुर्वेदी बांधव बड़ी संख्या में उपस्थित रहे तथा भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया। उस के बाद से इस मंदिर में आरती तथा मंदिर सेवा निर्बाध गति से चल रही है। प्रसन्नता का विषय यह है कि जीर्णोद्धार के बाद से प्रतिवर्ष, चारों नवरात्रि (दोनों गुप्त नाव रात्रि) पर महाविद्या देवी की पूजा, सेवा, पोशाक तथा भंडारे / प्रसाद का कार्यक्रम, श्री त्रिभुवन जी के सहयोग से से निरंतर आयोजित किया जा रहा है। जीर्णोद्धार के बाद से, पूजा अर्चना के लिए चतुर्वेदी समुदाय के अलावा भी अन्य स्थानीय सभी लोग बड़ी संख्या मैं आदर तथा श्रद्धा भाव से पधार रहे है। महाविद्या के प्रांगण मैं स्थित महादेव मंदिर का भी जीर्णोद्धार किया गया है। समाज के लिए आदरणीय डॉ सतीश जी, श्री महेश पाठक तथा श्री त्रिभुवन जी द्वारा शताब्दियों से लंबित इस जीर्णोद्धार के अनुकरणीय कार्य के नेतृत्व तथा सहायोग प्रदान कर, भव्य निष्पादन करने के लिए, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा तथा समस्त चतुर्वेदी समुदाय हृदय से आभारी है।

- मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
कार्यवाहक मंत्री, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

कुलदेवी श्री चर्चिका देवी

- डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी, साहित्याचार्य, पीएचडी, मथुरा

त्वां एतोष्यन्ति सदा देवी बलि पुष्पोंतकरैः करैः।
चर्चिकेति शुभं नाम मस्माद् रूधिर चर्चिता।।

हे देवी तुम रक्त से लथपथ अर्थात चर्चित हो अतः तुम्हारा नाम चर्चिका होगा ।भगवान श्री शिव ने ही भगवती को यह नाम दिया है। वामन पुराण के सत्तरवे अध्याय में भगवती माँ चर्चिका के प्रकार का वर्णन प्राप्त होता है। इसमें आठ भैरवों की उत्पत्ति भी उनके साथ हुई है ऐसा वर्णन किया गया है। प्रसंग आरंभ होता है देवासुर संग्राम से जब अंधक असुर का अत्याचार अत्यधिक बढ़ गया, तो स्वयं भोले नाथ देव गणों के साथ युद्ध भूमि में पधारे जहां भीषण युद्ध आरंभ हुआ। किंतु समस्या यह थी कि जितने असुर मृत्यु को प्राप्त होते थे। दैत्य गुरु शुक्राचार्य अपनी संजीवनी विद्या का प्रयोग कर उन्हें पुनर्जीवित कर देते थे। जिससे से पुनः युद्ध करने को उपस्थित हो जाते थे। नंदी ने शंकर जी से कहा कि प्रभु मरे हुए लोगों का पुनः जी उठना असंभव होता है, किंतु भार्गव शुक्राचार्य ने अपनी संजीवनी विद्या कारण पुनः जीवित कर दिया है। देवताओं के सभी प्रयत्न जब विफल होने लगे हैं तब शिव जी ने कहा हे गणपति! तुम जाओ और शुक्राचार्य को मेरे पास लेकर आओ। मैं योग क्रिया से उन्हें संयमित कर दूंगा। नंदी गए और भीषण युद्ध के बाद जैसे-तैसे शुक्राचार्य को लेकर शिवजी के समक्ष उपस्थित हुए। जिन्हें देखते ही शिव जी ने अपना मुंह खोल कर उन्हें अपने उदर में पहुंचा दिया। शुक्राचार्य भी परम शिव भक्त थे वे वहीं स्थित होकर शिवजी की स्तुति करने लगे।

त्रिनयन हर भव शंकर उमापते जीयूतकेतो,
गुहाग्रह श्मशान निरत भूति विसेपन शूलपाणे।
पशुपते गोपते तत्पुरुषसत्तम नमो नमस्ते।

अर्थात हे त्रिनयन, हे हर, हे भव, हे शंकर, हे उमापते! हे जीमूतकेतो! हे गुहाग्रह, हे श्मशान निरत,हे भूति विलेपन! हे त्रिशूल धारिन ! हे पशुपते आपको बारंबार नमस्कार है। इस प्रकार स्तुति करते शिव जी के उदर में विचरण करते हुए उन्होंने शिवजी के उदर में चराचर प्राणियों से व्याप्त सारा जगत, समुद्र एवं पाताल, आदित्य, वसु, रुद्र, विवेक देवा, गण, यक्ष, गंधर्व ,मुनि, मनुष्य, पशु, कीट, वृक्ष, पर्वत, द्विपद, चतुष्पद आदि को देखा। दिव्य एक वर्ष तक समय व्यतीत होने पर परेशान हो उन्होंने भगवान की स्तुति प्रारंभ की :

विश्वरूप महारूप विश्वरूपाक्ष सूत्र धृक ।
सहस्त्रक्ष महादेव त्वामहै शरणंगतः।।

अर्थात हे विश्वरूप ! हे महारूप ! हे विश्वरूपाक्ष! हे सूत्रधारिन्! हे सहस्त्रशास्त्र ! हे महादेव मैं आपकी शरण में हूँ। मैं आपके उदर में सभी भुवनों को देखते- देखते थक गया। मैं आपकी शरण में हूं। शिवजी बोले -हे भार्गववंशीय चंद्र तुम मेरे उदर में जाकर मेरे पुत्र हो गए हो अतः तुम मेरे शिश्न से बाहर आओ। ऐसा कह उन्होने शुक्राचार्य को अपने शिश्न मार्ग से मुक्त कर दिया। शुक्राचार्य भगवान को प्रणाम कर चले गए।

शुक्राचार्य के मुक्त होते ही युद्ध पुनः भीषण रूप से आरंभ हो गया। शंभू नामक दैत्य ब्रह्मा से, कुम्भज विष्णु से, शाल्व सूर्य से, मिशिरा वरुण से, द्विमूर्धा

पवन से, राहू सोम से एवं विरुप घृक से युद्ध करने लगा।

विधुन्माली नामक महाअसुर ने अकेले ही एकादश रूद्र से उठकर मुकाबला किया। आठ दिव्य वर्ष तक यह महाभीषण युद्ध चला। अपनी विजय ना होते देख असुरों ने माया का सहारा लेकर देवताओं को निगलना प्रारम्भ कर दिया।

अचानक देव गणों को लुप्त होता देख शिव जी ने क्रोध से जृम्भायिका को उत्पन्न किया। उसके स्पर्श करने पर दानव अस्त्रों का त्याग कर जंभाई लेने लगे तथा अपना मुख फाड़ने लगे जिससे सभी देवगण उनके देह से बाहर निकल आए। और फिर भयानक युद्ध हुआ। जिसमें दानव हारने लगे। अपने को पराजित होते देख अंधक एवं उसका सेनापति सुन्द चुपचाप युद्धभूमि से बाहर निकले और अंधक ने शिव का तथा सुन्द ने नन्दी का वेश धारण कर

मन्दरगिरि पर जहां पार्वती स्थिर भी थी, पहुँचे। उन्हें आया देख पार्वती ने विचारा कि शिव लंबे समय से युद्ध करके निश्चित ही आहत हुए होंगे ऐसा सोच उनके शरीर पर लेप लगाने के विचार से जैसे ही उनके समीप आयी शंकर जी के शरीर के चिन्हों को ना देख वे पहचान गई कि ये मायावी हैं। अंन्धक भी भेद

खुलते ही वहां से निकल कर वापस युद्ध भूमि में आ गया। इधर भीषण युद्ध में भगवान विष्णु, ब्रह्मा एवं इंद्र ने अनेक बड़े असुरों को मार गिराया। जिससे दानवों में हाहाकार मच गया ।

अब शुक्राचार्य के मना करने पर भी अंधक ने पुनः युद्ध आरंभ किया तथा अपने युद्ध कौशल से देवताओं को वाण वर्षा कर भयाक्रांत कर दिया। उसके प्रहार से देवगण घायल होने लगे। यह देख शिव ने सभी देवताओं को अपने शरीर में छुपा लिया और वे स्वयं अंधक से युद्ध करने लगे। शिव ने अपने त्रिशूल से उस पर भीषण प्रहार किया, किंतु वह इस प्रहार को सहकर भी एक कोस तक शिव को खींच ले गया और उन पर गदा से प्रहार किया। जिससे उनके शरीर से रक्त प्रवाह होने लगा। इस रक्त से पूर्व दिशा से विधाराज, दक्षिण से कालराज, पश्चिम से कामराज, उत्तर से सोमराज नामक भैरव उत्पन्न हुए। धाव के रक्त के ही भाग से स्वच्छन्दराज पृथ्वी पर गिरे रक्त से ललितराज नामक तथा विध्नराज नामक भैरव उत्पन्न हुए। शिव जी ने मिररस से अंधक की छाती को विदीर्ण कर छाते की तरह उसे उठा लिया जिससे उसका रक्त उनके ऊपर गिरने लगा।

इस कार्य में हुए श्रम से उनके अत्यधिक पसीना भी आने लगा इससे एक कन्या एवं एक बालक उत्पन्न हुआ। यह दोनों ही उस दुष्ट अंधक का रक्त पान करने लगे इसे देखकर भगवान शंकर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे चर्चिका नाम से संबोधित किया। जिसका वर्णन आरम्भ में किया जा चुका है। शिवजी ने कहा कि हे प्रातः कालीन सूर्य के समान क्रांतिवाली कन्या, शुभ कारिणी देवता, ऋषि, पितर, सर्पादि, यक्ष, विद्याधर एवं मानस तुम्हारी पूजा करेंगे। तुम्हारी स्तुति करेंगे। तुम रक्त से लथपथ (चर्चित) हो अतः तुम्हारा नाम चर्चिका होगा। भगवान शंकर के ऐसा कहने पर व्याघचर्म को वस्त्र रूप में धारण करने वाली देवी चर्चिका पृथ्वी पर चारों ओर विचलित हुई। इंगुर के समान रंग वाले पर्वत पर चली गई। भगवान शिव ने इसके बाद अंधक के शरीर के रक्त को अपने नेत्रों की अग्नि से सुखाकर रक्त रहित कर दिया। जिससे वह पाप रहित हो गया और भगवान शिव की स्तुति करने लगा। भगवान प्रसन्न हो गये और उसे जीवनदान देकर अपने गणों में सम्मिलित कर भृग्डी नामक गण बना लिया।

एकादशी व्रत का महत्व

- **श्रीमती उषा चतुर्वेदी**, भोपाल

हमारी भारतीय संस्कृति में हिंदू धर्म में एकादशी या ग्यारस एक महत्वपूर्ण तिथि है। इस व्रत की की हमारे हिंदू धर्म में बड़ी महत्ता है। यही कारण है हिंदू धर्मावलंबी बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ एकादशी का व्रत करते हैं। एकादशी देवी थी जो भगवान विष्णु के द्वारा उत्पन्न की गई थी। भगवान विष्णु के प्रकट करने के कारण ही एकादशी के व्रत में भगवान विष्णु की पूजा की जाती है।

एकादशी व्रत क्या है

एक ही दशा में रहते हुए अपने आराध्य देव का पूजन एवं वंदन करने की प्रेरणा देने वाला व्रत एकादशी व्रत कहलाता है। पद्म पुराण में भी एकादशी महा पुण्य प्रदान करने वाली उल्लेखित है, कहा जाता है जो व्यक्ति इस व्रत को करता है उसके पितृ तथा पूर्वज बुरी योनी को त्याग स्वर्ग लोक चले जाते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं। हिंदू पंचांग की 11वीं तिथि को एकादशी कहते हैं। एकादशी संस्कृत भाषा से लिया शब्द है। यह माह में 2 बार आती है। पूर्णिमा के बाद तथा अमावस्या के बाद। इस तरह से एकादशी साल में 24 होती हैं। लेकिन अधिक मास को मिलाकर इनकी संख्या 26 हो जाती है।

महत्व

पुराणों के अनुसार एकादशी को हरी दिन और हरी बासर भी कहते हैं।यह व्रत वैष्णव तथा गैर वैष्णव भी करते हैं ऐसा कहा जाता है एकादशी का व्रत हवन यज्ञ वैदिक कर्मकांड आज से अधिक फल देता है स्कंद पुराण में भी इसके महत्व का वर्णन है।

नियम

एकादशी व्रत करने के नियम बहुत सख्त होते हैं व्रत करने वाले को एकादशी तिथि से पहले सूर्यअस्त से लेकर एकादशी के अगले सूर्योदय तक उपवास करना पड़ता है अर्थात दशमी के दिन सूर्य अस्त के बाद से व्रत शुरू हो जाता है दशमी के दिन भी कुछ नियम पालन करने पड़ते हैं उदाहरण स्वरूप मांसाहार नहीं किया जाता। प्याज, मसूर की दाल, शहद का सेवन भी नहीं किया जाता।

एकादशी के दिन सुबह दातून का इस्तेमाल ना करें। इसके स्थान पर नींबू, जामुन या आम के पत्ते चबाकर उंगली से दांत साफ करें। इस दिन पत्ते तोड़ना वर्जित है। गिरे पत्ते प्रयोग में लाए जाते हैं। स्नानादि के पश्चात मंदिर जाकर गीता का पाठ करें तथा

ओम भगवते वासुदेवाय मंत्र का जाप करें तथा यथाशक्ति दान करें। दूसरे दिन अर्थात द्वादशी के दिन आम दिनों की तरह कार्य करें। सुबह उठकर भगवान विष्णु की पूजा करें तथा उसके पश्चात सामान्य भोजन लेकर व्रत समाप्त करें। इस बात का ध्यान रखें कि त्रयोदशी लगने से पहले ही व्रत का पारण कर ले।

भोजन

एकादशी के दिन व्रती ताजे फल में भी चीनी, कूटू, नारियल, जैतून, दूध, अदरक, काली मिर्च, सेंधा नमक, आलू, साबूदाना और शकरकंद का प्रयोग कर सकते हैं।

एकादशी को वर्जित कार्य

वृक्ष के पत्ते ना तोड़े। बाल नहीं कटवाए। कम बोले यदि संभव हो तो मौन करें। चावल का सेवन वर्जित है। किसी का दिया हुआ अन्न खाएं। फलाहार में गोभी, शलजम, पालक का सेवन ना करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। वर्ष भर में होने वाली 24 एकादशी को हमारे सनातन हिंदू धर्म में अलग-अलग नाम से जाना जाता है, तथा इनके अलग-अलग महत्व भी हैं। पूजन विधि में भी थोड़ा सा फर्क होता है।

एकादशियों के नाम

पुत्रदा एकादशी : पुत्रदा एकादशी को भगवान विष्णु का पूजन किया जाता है। इस दिन केसर, केला तथा हल्दी का दान दिया जाता है। चावल खाना पूरी तरह से वर्जित है। साल में दो पुत्रदा एकादशी होती हैं। पौष माह में और श्रावण शुक्ल पक्ष मैं संतान प्राप्त हेतु इसका व्रत किया जाता है। साथ ही में जिस व्यक्ति का विवाह ना हो रहा हो जल्दी विवाह योग चाहते हो तो भी इस का व्रत किया जाता है।

षटतिला एकादशी : षटतिला एकादशी माघ कृष्ण एकादशी को कहते हैं। हरि विष्णु तथा कृष्ण की आराधना इस दिन होती है। दरिद्रता दुर्भाग्य दूर करती है, तथा इस दिन तिल का छह प्रकार से उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे षटतिला एकादशी कहते हैं।

जया एकादशी : माघ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को जया एकादशी कहते हैं। भगवान विष्णु की पूजा तथा विष्णु मंत्रों का 108 बार जाप तुलसी की माला से किया जाता है, तो फलदायक होता है। भगवान विष्णु की शालिग्राम के रूप में पूजा की जाती है

इस दिन यह कार्य वर्जित हैं, पान ना खाएं। निंदा या आलोचना से बचें। स्त्री साथ वर्जित है।

विजया एकादशी : यह एकादशी फागुन मास के कृष्ण पक्ष को होती है। जैसा किसका नाम है। यह शत्रु पर विजय दिलाती है जब आप भयंकर शत्रुओं से घिरे हो और पराजय सामने दिख रही हो। उस समय विजया एकादशी करने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। कहा जाता है प्राचीन समय में बहुत से राजाओं ने विजया एकादशी का व्रत कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। पूजा में 7 प्रकार के धान्य तथा घट की स्थापना होती है। गेहूं, उड़द, मूंग, चना, जौ, चावल और अरहर बिछाकर, उस पर घट रख विष्णु की पूजा की जाती है।

आमलकी एकादशी : फागुन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी आमलकी एकादशी कहलाती है। भगवान विष्णु के साथ शिव की पूजा की जाती है। इसे रंगभरनी ग्यारस भी कहते हैं। जीवन में सुख संपन्नता प्रदान करने वाली एकादशी है। आंवले के पेड़ का पूजन करें। पेड़ की 27 या 7 या 9 आँवला दान करे।

पाप मोचनी एकादशी : यह चैत मास की कृष्ण पक्ष को मनाई जाती है इस का व्रत करने से मनुष्य के पाप तथा संकटों से छुटकारा मिल जाता है। इस दिन भगवान विष्णु के चतुर्भुज रूप की पूजा की जाती है।

कामदा एकादशी : चैत मास की शुक्ल पक्ष को जो एकादशी आती है। कामदा एकादशी कहलाती है। इस एकादशी का व्रत करने से ब्रह्म हत्या, पिशाचत्व दोषों का नाश होता है। यह चैत्र मास की प्रतिपदा के बाद पड़ती है और मनुष्य के मनोरथ पूरे करती है। इसका उल्लेख बराहपुराण में भी है। भगवान विष्णु के साथ कृष्ण की पूजा भी की जाती है।

वरुथनी एकादशी : वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को वरुथिनी एकादशी कहते हैं। यह सौभाग्य प्रदान करने वाली होती है। कहा जाता है 10 सहस्त्र वर्ष तक तप करने का जो फल प्राप्त होता है। वह वरुथिनी एकादशी व्रत करने से ही प्राप्त हो जाता है।

मोहनी एकादशी : वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को मोहिनी एकादशी कहते हैं। मोहिनी एकादशी का व्रत करने से मनुष्य जाल से छूट जाता है तथा मनुष्य के जो पाप हैं उनसे भी उसे छुटकारा प्राप्त हो जाता है इसलिए मोहिनी एकादशी के व्रत का बहुत महत्व है।

अपराएकादशी : जेठ मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को अपरा एकादशी कहते हैं। इसे अचला एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। साथ ही इसे भद्रकाली, जल क्रीडा एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी की पूजा में चंदन श्रीखंड तुलसी दल गंगाजल तथा फल का प्रयोग करना आवश्यक है तथा उसी का प्रसाद लगाया जाता है। यह व्रत कष्टों से छुटकारा दिलाता है सुख मिलता है धनसंपदा मिलती है।

निर्जला एकादशी : जेठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी निर्जला एकादशी कहलाती है जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है इस दिन बिना जल के व्रत किया जाता है। दान में वस्त्र

छाता फल भी दान दिए जाते हैं। इसे भीमसेनी एकादशी भी कहते हैं। इसका व्रत दीर्घायु तथा मोक्ष प्राप्त करने के लिए किया जाता है। भगवान विष्णु की आम या गुलाब शरबत का भोग लगा पीले फूल चढ़ाकर एकादशी का व्रत करते हैं। एक मटके में जल या शरबत भरकर पंखा दान करने का अधिक महत्व है।

योगनी एकादशी : आषाढ़ माह की कृष्ण पक्ष की एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस योग योगिनी एकादशी का व्रत का फल 88000 ब्राह्मणों को भोजन कराने के बराबर प्राप्त होता है।इसदिन अन्न दान किया जाता है ।यह व्रत कल्पतरू के समान होता है।

देवशयनी एकादशी : यह आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को कहते हैं इसका विशेष महत्व है। इसे हरि शयनी एवं पद्मा एकादशी भी कहते हैं। इसी दिन से चतुर्मास का प्रारंभ होता है। विष्णु सहस्त्रनाम तथा पुरुषसूक्त का जाप करना चाहिए भगवान विष्णु भी 4 मास तक पाताललोक में निवास करते हैंम तथा क्षीरसागर की अनंग सैया पर शयन करते हैं। इस दिन से शुभ व मांगलिक कार्यों पर विराम लग जाता है।

कामका एकादशी : श्रावण मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को कामका एकादशी कहते हैं इस एकादशी का व्रत करने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है भगवान शिव तथा विष्णु का पूजन इस दिन किया जाता है। इस व्रत को करने का फल अश्वमेघ यज्ञ के समान प्राप्त होता है। भगवान को पीले रंग के वस्त्र आज के दिन अर्पित करना चाहिए।

श्रावण पुत्रदा एकादशी : सावन शुक्ल एकादशी का नाम श्रावण पुत्रदा एकादशी है।

अजा एकादशी : भादो महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी को अजा एकादशी कहते हैं इसे कामिका या अन्नदा के नाम से भी जाना जाता है। इसकी खास बात यह है कि एकादशी के पूरे दिन भगवान विष्णु की मूर्ति के सामने दीपक जलाया जाता है। दीपक द्वादशी को हटाए तथा भगवान विष्णु तथा लक्ष्मी की पूजा होती है। यह बात करने से सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं।

परिवर्तनी एकादशी : भाद्रपद की शुक्ल की एकादशी को परिवर्तन एकादशी कहते हैं इसे जयंती एकादशी भी कहते हैं। इस दिन भगवान विष्णु के वामन रूप की पूजा की जाती है तथा वामन रूप की पूजा करने का फल तीन लोको की पूजा करने का फल प्राप्त होता है।

इन्दिरा एकादशी : पित्र पक्ष में पढ़ने वाली एकादशी को इंदिरा एकादशी कहते हैं। इस दिन पितरों के लिए पिंडदान किया जाता है। पिंडदान की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। भगवान विष्णु को पीले फूल चढ़ाए जाते हैं। उड़द की दाल की खादय सामग्री का प्रसाद लगाया जाता है।

पदमनी एकादशी : पुरुषोत्तम मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को पद्मिनी एकादशी कहते हैं मलमास में आने के कारण इसे पुरुषोत्तम एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। मलमास में वैसे भी दान दक्षिणा का महत्व बहुत अधिक होता है।

परम एकादशी : अधिक मास में पढ़ने वाली एकादशी को परमा एकादशी कहते हैं। इस एकादशी को भी सभी प्रकार के दान महत्वपूर्ण होते हैं।

पापंकुशा एकादशी : अश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को पाप कुशा एकादशी कहते हैं। भगवान विष्णु के पदम नाम रूप की पूजा की जाती है। इस दिन हाथी को प्रेम रूपी अंकुश से भेदने के कारण रात में भगवान विष्णु की मूर्ति के पास सोना चाहिए इस दिन मौन रखने का विधान है।

रमा एकादशी : इसे रमा एकादशी भी कहते हैं। विष्णु तथा मां लक्ष्मी दोनों की पूजा की जाती है यह कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को रमा एकादशी कहते हैं। माता लक्ष्मी से संबंधित होने कारण ही इसका नाम रमा एकादशी पड़ा।

देवोत्थान एकादशी : इसे देवउठनी तथा देव प्रबोधनी, हरि प्रबोधिनी एकादशी के नामों से जाना जाता है। इस दिन तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ हुआ था या एकादशी की खास बात यह है कि इसके बाद ही शादी आज के मुहूर्त प्रारंभ हो जाते हैं। आदि पुराण के अनुसार बुद्धि तथा शांति प्रदाता संतान दायक एकादशी होती है। भगवान विष्णु चार मास के शयन के बाद आज ही उठते हैं। घर घर में देवोत्थान की पूजा की जाती है।

उत्पन्ना एकादशी : यह साल की सबसे बड़ी एकादशी है। यह अगहन मास की कृष्ण पक्ष की है। एकादशी का व्रत उत्पन्ना एकादशी से प्रारंभ होता है। जो लोग एकादशी का व्रत रखना चाहते हैं। वह इसी एकादशी से प्रारंभ होता है। बीच की एकादशी से प्रारंभ नहीं किया जाता है। एकादशी एक देवी थी जिनका जन्म विष्णु जी से हुआ था अर्थात विष्णु जी से उत्पन्न हुई थी। इसलिए इसे उत्पन्ना एकादशी के नाम से जाना जाता है।

मोक्षदा एकादशी : मुजरा एकादशी के दिन विष्णु भगवान की पूजा के साथ कृष्ण की पूजा भी होती है। भगवान विष्णु की पूजा तुलसी की मंजरी से की जाती है। गीता का पाठ किया जाता है। ऐसा करने से पापों का शमन होता है तथा इस एकादशी का व्रत करने से गंगा स्नान का फल भी प्राप्त होता है।

चतुर्थी और महत्व

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

हम सबको विदित है कि गणेश जी हमारे 'प्रथम पूज्य' देवता हैं। इन्हें शंकरजी आदि देवी-देवताओं का 'प्रथम पूज्य'का आशीर्वाद प्राप्त है। 'प्रथम पूज्य'आशीर्वाद के पीछे कई कथाओं का भी वर्णन पढ़ा और सुना गया है। इनकी पूजा का दिन बुधवार माना गया है। इस दिन को लोग बुध-विनायक कहकर भी मानते हैं। इनकी विशेष पूजा-अर्चना माह में पड़ने वाले दो चतुर्थी को मानते हैं। हिंदू पंचांग के अनुसार, एक मास में दो बार चतुर्थी आती है और एक वर्ष में 24 चतुर्थी होती हैं। अधिक मास होने से इनकी गिनती 26 हो जाती है। यह चतुर्थी कृष्ण पक्ष के बाद चतुर्थ दिन और शुक्ल पक्ष के बाद चतुर्थ दिन को पड़ती है। शुक्ल पक्ष के बाद पड़ने वाली चतुर्थी को विनायक-चतुर्थी और कृष्ण पक्ष के बाद आने वाली चतुर्थी को संकट-चतुर्थी कहते हैं। गणेश चतुर्थी हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्यौहार भारत के विभिन्न भागों में मनाया जाता है, किंतु महाराष्ट्र में यह बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। पुराणों के अनुसार भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश जी का जन्म हुआ था। यह चतुर्थी हरितालिका तीज के दूसरे दिन होती है। हर चतुर्थी का अपना महत्व होता है। ऐसी मान्यता है कि गणेश चतुर्थी की पूजा और व्रत करने से परिवार में आने वाली हर विपदा को विघ्नहर्ता दूर करते हैं। इस दिन भगवान श्री गणेश के साथ चंद्र देव की पूजा करने का भी विधान है। कहते हैं ऐसा करने से व्यक्ति के कई जन्मों के पाप कट जाते हैं।

माह की 12 चतुर्थियों के पूजन - नियम

गणेश जी आदिकाल से पूजित रहे हैं। वेदों में पुराणों में गणेश के संबंध में अनेक लीला कथाएं प्रचलित हैं। विभिन्न प्रकार की इनकी पूजा पद्धतियां पढ़ने और देखने को मिलती है। उनके नाम से गणेश–पुराण भी सर्व सुलभ है। देवता कोई भी हों पूजन कोई भी हो, गणेश पूजन के बगैर सब निरर्थक हो जाता है।

प्रथम पूजित नाम प्रभाऊ ।। मृदुल पुराण में "वक्रतुंडाय हुम" जप का निर्देश दिया गया है। इस जप के साथ पूजा पाठ करने से गणेश जी को प्रसन्न किया जा सकता है।

12 माह की चतुर्थी पर गणेश पूजन

शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश पूजन के साथ चंद्रमा पूजा करके व्रत तोड़ा जाता है। कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को व्रत कर चंद्र दर्शन एवं पूजन कर ब्राह्मण भोजन कराने से अर्थ, धर्म ,काम मोक्ष सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

पहला – चैत्र माह की चतुर्थी पर, गणेश पूजन व्रत कर एवं चांद पूजकर, ब्राह्मण को सुवर्ण दक्षिणा देने का विधान माना जाता है।

दूसरा– वैशाख माह में दोनों चतुर्थीओं का पूजन कर, शंख, वस्त्र दक्षिणा देने का विधान है। इस माह में "संकर्षण" गणेश का पूजन होता है।

तीसरा– जेठ माह में "प्रद्युम्न रूपी" गणेश जी का पूजन कर फल, शाक, मूली आदि दान दें।

चौथा– आषाढ़ माघ में "अनिरुद्ध रूपी" गणेश जी का पूजा व्रत करके सन्यासियों को तुम्बी इत्यादि देने का विधान है। शास्त्रों में इस दिन का बहुत महत्व बताया गया है।

पांचवां – सावन मास में स्वर्ण के गणेशजी बनाकर उन पर स्वर्ण की दूर्वा चढ़ाएं इस प्रकार 5 वर्ष तक व्रत पूजन कर अभीष्ट की प्राप्ति हो सकती है ।

छठवाँ – भाद्रपद यानी भादों माह में "सिद्धिविनायक" की पूजा होती है। इस माह में 21 प्रकार के पत्ते जैसे – शमी पत्र, भंगरेया, बिल्वपत्र, दूर्वा, बेल, धतूरा आदि के पत्ते गणेश जी पर चढ़ाए जाते हैं। एक एक पत्ता ॐ गं गणपतये नमः कहकर गणेश जी पर चढ़ाया जाता है। कहते हैं, ऐसा करने से यानी पूजा दान करने से वर्षों तक व्यक्ति को सुखों की प्राप्ति होती है।

सातवां– अश्विन या क्वार मास की चतुर्थी को पुरुष–सूक्त द्वारा अभिषेक करना अति पुण्यदायी माना जाता है।

आठवां– कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को करवा चौथ कहते हैं। यह महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अपने सुहाग की

लंबी उम्र की कामना के लिए व्रत है इसमें 10 करवे गजानन को अर्पित करने के बाद महिलाओं में बांट दिए जाते हैं। इस व्रत को 12 या 16 साल तक करने का विधान है। इस पूजा में चांद को भी अर्ध्य दिया जाता है ।

नौवां – मार्गशीर्ष या अगहन चतुर्थी में किया जाने वाला व्रत अत्यंत कठिन होता है। यह व्रत 4 वर्ष तक किया जाता है। फिर कुछ व्रत पूजन आदि कर इसे बंद कर दिया जाता है। अगहन चतुर्थी महात्म का वर्णन स्कन्द पुराण में है ।

दसवां – माह की चतुर्थी पर विघ्नेश्वर का व्रत पूजन भक्ति करने से और ब्राह्मण को दान दक्षिणा देने से धन का अभाव नहीं होता।

ग्यारहवां– माघ मास में गजमुख गणेश का पूजन कर, तिल लड्डू चढ़ाने का विधान है। इसमें गणेश जी की मूर्तिपूजा विशेष मानी जाती है। गणेशजी को अर्घ्य प्रदान कर तिल के लड्डू या तिल से बनी मिठाइयां चढ़ाना अति शुभ माना जाता है। और अर्घ्य में लाल चंदन, पुष्प, दूर्वा, अक्षत, शमीपत्र, दूध, दही और जल मिलाकर देते हैं। फाल्गुन मास में धुंडीराज गणेश का पूजन किया जाता है ।

बारहवां – फाल्गुन माह में चतुर्थी व्रत कर दान दक्षिणा देने से गणेश जी की दया और करुणा अपने भक्तों पर बनी रहती है ऐसा माना जाता है। और अंत में भक्तों को गणेश जी के दिव्य लोक में स्थान मिलता है। वैसे तो, हर मास की हर पक्ष पखवाड़े की चतुर्थी महत्वपूर्ण है परंतु कुछ चतुर्थी ऐसी हैं जो एक पर्व का रूप ले लेती है। इन चतुर्थी तिथि को बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

बहुला चतुर्थी – भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को बहुला चौथ या बहुला गणेश चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है। महिलाएं इस व्रत को संतान की रक्षा के रूप में भी मानती हैं। इस चतुर्थी व्रत में गणेश पूजन तो करते ही हैं ,परंतु गौ पूजन का भी बहुत महत्व मानते हैं। मान्यता है, कि इस व्रत को रखने से संतान के कष्ट अपने आप ही दूर हो जाते हैं ।यह व्रत निसंतान को संतान देता है और संतान को मान–सम्मान संपदा ऐश्वर्य और निरोगी काया देता है। बहुला चतुर्थी के व्रत में माताएं पूरा दिन निराहार रहकर शाम को मिट्टी की गाय और बछड़ा बनाकर उसकी पूजा करती है। भगवान की पूजा कथा करके उन्हें भांति भांति के पकवान बनाकर उनका भोग लगाते हैं। इस प्रसाद को भगवान को भोग लगाने के बाद सब में बैठकर इसे शाम को गाय/बछड़े को खिलाया जाता है। इस दिन श्री गणेश गाय माता और शिव की पूजा करने से सुख समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है। बहुला चतुर्थी व्रत की कथा भी बहुत रोचक है। जब श्री विष्णु जी ने भगवान कृष्ण के रूप में अवतार लिया, तब कई देवी–देवताओं ने भी गोप गोपियों के रूप में अवतार लिया। 'कामधेनु' नाम की गाय के मन में भी कृष्ण भगवान की सेवा करने का विचार आया और अपने अंश से बहुला नाम की गाय बनकर नंद बाबा की गौशाला में आ गई। भगवान कृष्ण का बहुला गाय से बहुत स्नेह था। एक दिन कृष्ण जी ने बहुला की परीक्षा लेनी चाहिए। वह एक सिंह का रूप धर बहुला के सामने आ गए। बहुला सिंह को देख घबरा गई क्योंकि, वह अपने भूखे बछड़े को दूध पिलाने जा रही थी । उसने विनती की कि मैं अपने बछड़े को दूध पिला

कर आती हूं तब मुझे आप खा लेना। बहुला के बार–बार आश्वासन देने पर सिंह ने उसे जाने दिया। थोड़ी देर बाद, बहुला अपने बछड़े को दूध पिला कर वापस शेर के पास आ गई । उसकी सत्य निष्ठा देखकर श्री कृष्ण भगवान बहुत खुश हुए और अपने वास्तविक रूप में आकर बहुला से बोले, 'हे बहुला तुम परीक्षा में सफल हुई अब से भाद्रपद चतुर्थी के दिन गौ माता के रूप में तुम्हारी पूजा होगी । तुम्हारी पूजा करने वाले को धन संतान समृद्धि का सुख मिलेगा ।'

भादों की शुक्ल पक्ष चतुर्थी – शिव पार्वती के पुत्र गणेश जी के जन्म कथा वर्णन से पता चलता है। गणेश जी का जन्म ना होकर निर्माण पार्वती जी के शरीर से उतारी गई हल्दी उबटन से हुआ था। स्नान करने जाते समय पार्वती माता उन्हें अपने

रक्षक के रूप में बैठाकर स्नान करने चली गई और भोलेनाथ इस बात से अनभिज्ञ थे। पार्वती मां से मिलने में गणेश जी को अपना विरोधी मानकर उनका सिर काट कर उन्हें अपने रास्ते से हटा दिया। यह जानकर, मां भगवती शिवा क्रुद्ध हो गई और उन्होंने प्रलय करने की ठान ली। देवी देवताओं ने देवर्षि नारद की सलाह पर जगदंबा की स्तुति करके उन्हें शांत किया। शिव जी के निर्देश पर विष्णु जी उत्तर दिशा में सबसे पहले मिले जीव 'हाथी' का सिर काट कर ले आए। महामृत्युंजय रुद्र ने गज के उस मस्तक को बालक के धड़ पर रखकर उसे पुनर्जीवित कर दिया। माता पार्वती ने उत्साह में भरकर उस बालक को गले लगा लिया और देवताओं में अग्रणी होने का आशीर्वाद दिया। ब्रह्मा विष्णु महेश ने उसे सर्वाध्यक्ष घोषित करके अग्र पूज्य होने का वरदान दिया । भगवान शंकर ने कहा कि, हे गिरिजा नंदन, विघ्ननाश करने में तेरा नाम सर्वोपरि होगा। तुम्हारा जन्म चतुर्थी के दिन चंद्रोदय के समय होने के कारण स्थिति में जो तुम्हारा व्रत पूजन करने के पश्चात चंद्रमा को अर्घ देकर पूजन करेगा और ब्राह्मण को मिष्ठान और भोजन कराएगा उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी । जो व्यक्ति भादों मास की चतुर्थी की रात को चंद्रमा देख लेते हैं उन पर दोष या कलंक लग जाता है ऐसा सुना गया है । गणेशोत्सव हिंदुओं का उत्सव है यह कमोबेश संपूर्ण भारत में मनाया जाता है, परंतु महाराष्ट्र में विशेषकर मुंबई और पुणे का गणेश उत्सव प्रसिद्ध है। भादो मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से यह पूजा उत्सव आरंभ होकर 10 दिन बाद अनंत चौदस को समाप्त होता है। जो लोग गणेश प्रतिमा घरों में प्रतिष्ठित करते हैं, वह चौदस को मूर्ति विसर्जन करते हैं। वैसे, मूर्ति विसर्जन डेढ़ दिन 3 दिन 5 दिन 7 दिन पर भी किया जाता है ,और इस प्रकार मूर्ति विदा कर गणेश उत्सव का समापन होता है।

करवा चौथ – यह हिंदुओं का प्रमुख त्यौहार है। यह भारत के पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान का पर्व है। यह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। सौभाग्यवती महिलाएं मनाती हैं। यह व्रत सुबह सूर्योदय से पहले करीब 4:00 बजे से शुरू होकर रात में चंद्रमा दर्शन के बाद पूर्ण होता है। ग्रामीण स्त्रियों से लेकर आधुनिक महिलाएं तक यह व्रत बहुत श्रद्धा और उत्साह से करती हैं। पति की दीर्घायु एवं अखंड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भालचंद्र गणेश की पूजा अर्चना की जाती है। कार्तिक पक्ष की चतुर्थी को करके चतुर्थी व्रत के नाम से भी जानते हैं किसी भी जाति संप्रदाय की महिलाएं इस व्रत को कर सकती हैं।इस दिन भगवान शिव–पार्वती ,स्वामी कार्तिकेय, श्री गणेश एवं चंद्रमा का पूजन किया जाता है। रात में चंद्रोदय के बाद ही यह पूजा होती है प्रत्येक परिवार का अपना विधान है। अपने पारंपरिक रूप से इन सब की पूजा करते हैं इसमें करवा बांटने का बहुत महत्व है। करवों में पूरी लड्डू अनाज भरकर साथ में सुहाग सामग्री और वस्त्र रखकर बांटा जाता है। इस दिन महिलाएं करवा चौथ की कथा पड़ती या सुनती हैं यह व्रत निराहार और निर्जल रहकर करते हैं पूजन के बाद घर के बड़ों का आशीर्वाद लेकर व्रत तोड़ा जाता है।

संकट चतुर्थी या सकट चौथ – यह व्रत हर महीने में पड़ता है लेकिन सबसे प्रमुख माघ मास की चतुर्थी को हम इसे सकट चौथ के रूप में मनाते हैं। इसे हम 'संकष्टी चतुर्थी' के रूप में भी जानते हैं ।इस दिन, माताएं अपने बच्चों की सलामती के लिए दुआ मांगती हैं। सुबह विघ्नहर्ता की पूजा करती हैं और रात में चंद्रमा पूजन के बाद व्रत तोड़ते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन गणेश जी पर आया संकट टल गया था इसलिए इसका नाम सकट चौथ पड़ा। इस व्रत को तिलकुटा चौथ भी कहते हैं। कहीं कहीं यह मां की चतुर्थी के रूप में जानी जाती है ।जो व्यक्ति पूरे वर्ष चतुर्थी व्रत नहीं करते हैं, वह यदि मां की चतुर्थी का व्रत करने तो ऐसी मान्यता है कि उन्हें पूरे वर्ष की चतुर्थीओं का फल मिल जाता है। माघी तिल चतुर्थी के दिन मंदिरों में भीड़ का तांता लगा रहता है। मां की चौथ के अवसर पर महिलाएं दिनभर व्रत पूर्ण कर रात में गणेश पूजन और चंद्रमा पूजन करके तिल लड्डू और तिल की मिठाइयां नैवेद्य में अर्पित करती हैं। इस दिन, पूजा के साथ अथर्व शीर्ष और गणेश जी के बारह नाम जपने का महत्व माना जाता है। चतुर्थी किसी भी मांस या किसी भी पक्ष की हो विघ्नविनाशक एवं चंद्रमा की पूजा विशेष लाभकारी होती है। जो कोई चतुर्थी पूजन करता है, उसकी सब बाधाएं और विपत्तियां हल हो जाती है और चौथ माता एवं सभी देवी देवता अपनी कृपा दृष्टि अपने भक्तजनों पर बनाए रखते हैं। चौथ माता, मां पार्वती का ही एक रूप है । इनका एक मंदिर राजस्थान के सवाई माधोपुर में पहाड़ की चोटी पर स्थित है। यह मंदिर बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध है। करवा चौथ भाद्रपद चतुर्थी आदि में लाखों की संख्या में दर्शनार्थ यहां आते हैं। माता की पूजा कर उन्हें अखंड सौभाग्य,संतानों की सलामती और सुखी पारिवारिक जीवन का आशीर्वाद मिलता है। यहां सैकड़ों साल से एक अखंड ज्योति भी जल रही है। इस प्रकार के कई और चौथ माता मंदिर हमारे देश में है जहां विशेषकर चतुर्थी तिथियों पर लोग अपने श्रद्धा अर्पण करने जाते हैं। यह मंदिर चौथ माता के बरवाड़ा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

कुलदेवी
महाविद्या शक्तिपीठ, मथुरा

- **कैलाश चतुर्वेदी**, कासगंज

'' काष्यादिपुर्यो यदि सन्त लोकेतासां तु मध्ये मधुरैव धन्या।

या जन्म मौज्जीदूत मुक्ति दानै नृणां चतुर्धा विदधाति मुक्तिम।।''

स्कन्दपुराण में लिखा है कि काशी आदि सप्त पुरी जो मोक्ष दान के लिये प्रसिद्व है उनमें मथुरा विशेष रूप से धन्य है। काशी में केवल मृत्यु से ही मुक्ति मिलती है जबकि मथुरा में जन्म, यज्ञोपवीत, दान तथा मृत्यु इन चारों प्रकारों से मुक्ति मिलती है। अवतार एवं लीला भूमि होनें के फलस्वरूप मथुरा मोक्षदायिका तीर्थ है–'' अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, पुरीद्वारावती, श्चैत सप्तैते मोक्षदायिका।'' पृथ्वी,पाताल, अन्तरिक्ष तथा भूलोक में भगवान श्री कृष्ण को मथुरा के समान कोई प्रिय नहीं–

न विद्यते च पाताले नान्तरिक्षे न मानुषे।

समानं मथुराया हि प्रियं मम वसुन्धरे।।

सा रम्या च सुषस्ता च जन्मभूमिस्तथा मम।

पुराणों में मथुरा के चार नाम आते हैं– मधुपन्द्य, मधुपुरी, मधुरा तथा मथुरा। सबका सम्बन्ध मधुदैत्य से है जिसे मारकर शत्रुघ्न जी ने ऋषियों का क्लेश दूर किया था।

मथुरा के पश्चिम में टीले पर चतुर्वेदी समाज की कुलदेवी श्री महाविद्या देवी का ऐतिहासिक एवं पौराणिक मंदिर है–

देवी कदम्ववनगा मरूणत्रिकोण, संस्था सितांसिततराम्बुज कर्णिकास्थम।

सत्युस्त काक्षवलयाड़क्तिपाणि पद्मां, बागीश्रवरीं कुल गुरं प्रणमास्मि भक्तया।।

श्री महाविद्या का मंदिर अति प्राचीन शक्तिपीठ है, शक्ति की उपासना आज की उपासना नहीं है बल्कि अत्यन्त प्राचीन और अनादि है। शक्ति और उर्जा हमारे जीवन का आवश्यक तत्व है जिससे हम सब अनुप्राणित है। सम्पूर्ण ब्रहमांड का सृजन एवं पालन का जो अनवरत क्रम चलता रहता है वह देवी शक्ति द्वारा ही निर्दिष्ट है। हम लोगों के यहॉ विवाह में शाखोच्चार में कहा जाता है–

'' श्री कुलदेवी महाविद्ये वरदे त्वत्प्रसादात।''

वेदमंत्रो के उच्चारण, अग्नि के सात फेरो एवं कुलदेवी के आशीर्वाद से संस्कारो व जीवन मूल्यों को नवशक्ति, विष्वास तथा नवीनता मिलती है।

।। चतुर्भजा महादेवी नामज्ञोपवीतिनीम'' श्रीमदभागवत के दशम स्कन्ध में लिखा है कि यहॉ अम्बिका वन था। जहॉ नन्दबाबा भगवान श्री कृष्ण को लेकर देवी की पूजा करने आये थे। पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास में इसी वन में मंदिर के पास शमी वृक्ष पर अपने अस्त्र–शस्त्र बांध कर छिपाये थे। आगम शास्त्रों मे दस महाविद्याओं की प्रधानता तो स्पष्ट प्रतिपादित है। चामुण्डा तन्त्र में–

'' काली, तारा महाविद्या, शोडशी, भुवनेश्वरी।

भैरवी, छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।।

बगला, सिद्वविद्या च मातंगी कमलात्मिका।

एतादशा महाविद्याः सिद्वविद्याः पकीर्तिताः।।''

द्वितीय तारा को महाविद्या कहा गया है और इनको '' नील सरस्वती या नीलतारा'' भी माना जाता है जो सिद्वफलप्रदा है। ये दस महाविद्या दशावतारों की शक्तियां भी कही गई हैं। मुण्डमाला तंत्र में कहा गया है–

'' कृष्णरूपा कालिका स्यात रामरूपा च तारिणी।''

तारा रामरूपा शक्ति है और उनके चरणों में भी श्री हनुमान जी है जैसा कि महाविद्या के मंदिर की मूर्ति में है। छत्रपति शिवाजी ने अपने मनोरथ एवं भावी विजय संकल्पों को पूर्ण करने के लिए यहां पूजा अर्चना कर स्वर्ण छत्र चढाया। तंत्र शास्त्र के निष्णात साधक सम्राट दीक्षित एवं उपासक श्री शीलचन्द्र जी महाराज जैसे अनेक साधको ने अम्बिका वन स्थित महाविद्या मंदिर में शक्ति सिद्वि प्राप्त की अतएव यह सिद्व क्षेत्र में है और एक ऐतिहासिक सिद्वपीठ है।

'' ध्यायेत महादेवी सर्वकामार्थ सिद्वये'' निर्गुण तथा सगुणरूपा चिन्मयी पराशक्ति कुलदेवी महाविद्या को कोटिशः नमनः।

'' नमोयस्तु ससतं महाविद्यायै।''

श्री माथुर चतुर्वेदी सभाओं द्वारा
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से सम्बद्धता का आवेदन पत्र

सेवा में,

सभापति,
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा।

महोदय,

संस्था .... की एक बैठक दिनांक .... को .... स्थान .... पर आयोजित हुई जिसमें निर्णय लिया गया कि इस संस्था को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा सम्बद्ध किया जाय। अस्तु........................... संस्था को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से वर्तमान सत्र हेतु सम्बद्ध करने के निमित्त रूपये 251/– (दो सौ इक्यावन प्रति सत्र) सदस्यता शुल्क **"श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा"** के पक्ष में देय नगद/चैक एटपार/बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहे है।

निवेदन है कि .... संस्था को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से सम्बद्ध कर सदस्य सभा बनाने की कृपा करें। संस्था .... की ओर से हम घोषण करते है कि –

1. हमारी संस्था के सदस्य केवल श्री माथुर चतुर्वेदी है।
2. सत्र की अवधि में इस संस्था की यदि नई कार्यकारिणी गठित होती है तो उसे भी बिना शुल्क दिये सम्बद्धता के लिये आवेदन करना होगा तथा इस मध्य अवधि में संस्था की सम्बद्धता निलम्बित रहेगी।
3. श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के वर्ष 2020 में संशोधित संविधान तथा नियमावली के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता है।

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
नाम–	नाम–	नाम–
पद–कोषाध्यक्ष	पद–मंत्री	पद–सभापति
मो.नं.–	मो.नं.–	मो.नं.–
संस्था की सील	संस्था की सील	संस्था की सील

संलग्नकः–
1. बैठक में लिये निर्णय की कार्यवाही की छायाप्रति।
2. धनराशि भेजने के प्रमाण की छायाप्रति।

संस्तुति

हस्ताक्षर–
नाम–

सार्वजनिक विनम्र अपील

23.04.2024

सभी के सहयोग से प्राप्ति सहयोग राशि के कारण रू 2 लाख का आँकड़ा इस वित्तीय वर्ष के मात्रा 23 वें दिन में पार किया

सम्मानीय बन्धुवर/भगनी
पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु 24000 वार्षिक (रु 2000/- प्रति माह के हिसाब से) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए , बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के मध्य ही प्रदान की जा रही है।

वर्तमान में यह सहायता राशि 41 परिवारों को त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खारु. हस्तांतरित की जा रही है ।

सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उन के द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :-

1. स्वर्गीयबाबू ओंकारनाथ चतुर्वेदी होलीपुरा की स्मृति में 12000 और स्वर्गीय प्रभात चतुर्वेदी इटावा की स्मृति में 12000 द्वारा विकास चतुर्वेदी बीनददं भैया संयोजक बाबू ओंकारनाथ चतुर्वेदी धर्मशाला समिति द्वारा - रु. 24,000/-
2. मेज.जनरल श्री अजय कुमार चतुर्वेदी द्वारा रु. 2100/-
3. अपने पौत्र चि. ईशान के जन्म तिथि के उपलक्ष्य मैं श्री पदम कुमार जी चतुर्वेदी (तरसोख़र/लखनऊ) द्वारा रु. 5000/-
4. अपनी पोत्री कु धनिष्का पुत्री श्री अभिषेक जी (सिंगापुर) के जन्म दिन के उपलक्ष्य में श्री अनिल जी तथा श्रीमती मधुबाला चतुर्वेदी (रोहिणी/दिल्ली) द्वारा - रु. 11000/-
5. सुश्री नलिनी चतुर्वेदी (मैनपुरी ध्आगरा) राजकीय सेवा में प्रवक्ता के पद से 31 मार्च 2024 को सेवानिर्वत होने उपलक्ष्य में - रु. 11,000/-
6. अपनी पौत्री के जन्मदिन के उपलक्ष्य मैं श्री पंकज जी लखनऊ द्वारा - रु. 2400/-
7. श्री दिलीप सिकंदरपुरिया (लखनऊ) द्वारा - रु. 2100/-
8. श्री लोक नाथ जी (लखनऊ) द्वारा रु. 1000/-
9. श्री दीपक जी लखनऊ द्वारा रु. 5000/-
10. श्री अविनाश जी (होलीपुरा / कानपुर) रु. 12,000/-
11. आनंद सिंह चतुर्वेदी परिवार (होलीपुरा) की और से - श्री भरत जी (रिसरा / होलीपुरा) द्वारा - रु. 25,000/-
12. अपने नाना स्वर्गीय श्री धर्म नारायण चौबे (होलीपुरा) एवं नानी स्वर्गीय श्रीमती रंगो देवी चतुर्वेदी की स्मृति मैं सौरभ चतुर्वेदी सुपुत्र कैप्टन डॉ. प्रवीण चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी /आगरा) द्वारा रु. 25,000/-
13. अपने पिता स्वर्गीय श्री मोतीलाल चतुर्वेदी (मुखत्यार साहब) तथा माता स्वर्गीय श्रीमती रूपो देवी चतुर्वेदी की स्मृति में कैप्टन डॉ. प्रवीण चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) द्वारा रु. 25,000/-
14. अपने पुत्र चि. आयुष के रेडबुल एनर्जी (MNC) मैं एरिया मैनेजर दिल्ली NCR के पद पर पदोन्नति के उपलक्ष्य मैं श्री मनोज जी चतुर्वेदी (सागर) द्वारा रु. 5000/-
15. डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा) पूर्व राष्ट्रीय संयोजक युवा प्रकोष्ठ द्वारा रु. 24,000/-
16. समाज रत्न स्व. खरगराम जी की पावन स्मृति में, उन के पौत्र श्री मदन कुमार चतुर्वेदी होली पुराध्कलकत्ता द्वारा 24000/-

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग
रु. 2,03,600/-

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। इस आवश्यक कार्य तथा समाज की अपने साथी बहिनो तथा बांधवों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए अप्रैल से जून तिमाही की सहायता राशि महासभा ने स्थायी कोष से स्थानांतरित कर दी गई है।
सभी से बांधव तथा बहनों से करबद्ध निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में खुले ह्रदय से सहयोग देने की कृपा करें।

सहयोग राशि भेजने के लिए :- महासभा खाता विवरण:
Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C No.- 1006238340
IFS CODE& CBIN 0283533
CENTRAL BANK OF INDIA
BRANCH& ANAND VIHAR DELHI
राशि स्थानातंरण के बाद उस की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूरभाष तथा मउंपस के साथ सूचित करने की कृपा करें ।

निवेदक
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
सभापति
मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
कार्यवाहक मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
9871170559

होली मिलन

लखनऊ...

रविवार 31 मार्च 24 को रविन्द्रालय में लखनऊ मंडल के होली मिलन समारोह.......अरे पहले भांग ठंडाई लेओ कहते हुए गुल्लन जी ने जल्दी से गिलास पकड़ा दिया,जो स्वर्णेष जी के साथ ठंडाई वितरण की जिम्मेदारी निभा रहे थे। तभी बच्चों ने होली है कहकर चंदन लगा दिया, वहां पहले से ही पहुंचे सर्वश्री शैलजी, पुत्तन जी, मनीष जी, शिशिर जी,नवीन जी, विनय जी, आनंद जी,यदुवेश जी द्वय(मिंटू जी, पिंटू जी),हर्ष जी, प्रदीप जी, राकेश जी, शुभांग जी,प्रतीक जी, प्रवेश मुन्ना जी,अन्नू जी, चंद्रशेखर जी, अजय जी, सौरभ जी,दीपक जी, राजीव जी, संजय मिश्रा जी,नमन जी, टुनटुन जी,राजीव वकील तथा अन्य लोग एक दूसरे से होली मिलकर माहौल को उल्लास पूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण बना रहे थे,आगे हाल में ललित जी रसीद बुक लेकर सहयोग राशि लेने में मशगूल थे। तभी मंच पर कार्य क्रम संचालित करने के लिए अमिता जी एवं बबिता जी ने प्रकट होकर उपस्थित बांधवों का अभिवादन करते हुए अध्यक्ष मंत्री से दीप प्रज्वलित करने के लिए मुख्य अतिथियों को लाने के लिए अनुरोध किया, इसके बाद अध्यक्ष अजय जी, मंत्री नमन जी, कोषाध्यक्ष केयूर जी मुख्य अतिथियों सर्वश्री उमेश चन्द्र जी, अश्विनी जी, डॉ अशोक जी को सादर मंच पर लेकर पहुंचे,दीप प्रज्वलित करने के बाद मुख्य अतिथियों के आर्शीवाचन से समारोह की औपचारिक शुरुआत हुई, समारोह में लखनऊ में वरिष्ठ जनों सर्वश्री कृष्णमोहन जी, गजेन्द्रनाथ जी, महेश चन्द्र जी, रमाकांत जी, गणेश जी,खुनखुन जी, रमेशचंद्र जी, नवीन जी (गोमती नगर),मतोल जी,मुक्की जी के साथ ही व्हील चेयर पर पधारी जावित्री जी(उनके सुपुत्र शरद जी बधाई के हकदार हैं), आशा जी,कमलेश जी, उदिता जी की गरिमापूर्ण उपस्थित सबकी हौसला अफजाई कर रही थी।

मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत अविका के गणेश वंदना नृत्य से हुई, इसके बाद अक्षरा, प्रार्थी, इशिका,प्रचित,अर्णव, काव्य,आर्या,अन्यया एवं सलोनी ने कई आकर्षक होली नृत्य की प्रस्तुति दी,हाल में सभी ने जोरदार तालियों से बच्चों को उत्साहवर्धन किया। नृत्य के उपरांत महिलाओं का शानदार होली गायन हुआ, उसमें अल्का जी, अंजलि जी, अर्पिता जी, अनीता जी, पूजाजी, विभा जी, नीलिमा जी, मीता जी, वर्षा जी के साथ ही देहरादून से पधारी विनीता जी ने भी अच्छा साथ निभाया।सदन में सभी ने जोरदार तालियों से महिलाओं का भी अभिनंदन किया।

फिर मंच संचालन की जिम्मेदारी पुत्तन जी ने संभाली, सबसे पहले विशिष्ट अतिथियों ने डॉ अरविन्द जी, किशोर जी,देवेश जी, सिद्धार्थ जी,मोहित जी तथा तमन्ना जी,एलीशा जी, शिल्पी जी अपने अपने क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने पर विशेष सम्मान प्रदान किया, फिर अस्सी वर्ष से ऊपर के लिए डॉ वीरेंद्र जी, गजेन्द्र नाथ जी, अरविन्द जी, हेमलता जी को को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद मेधावी छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। मंडल कार्यकारिणी में अपने अथक परिश्रम से विशेष योगदान देने के लिए नवीन जी (इंदिरा नगर) एवं सौरभ जी (मोती नगर)को भी सम्मानित किया गया। यह सम्मान एवं पुरस्कार प्रदीप जी (विकास नगर), नवीन जी (इंदिरा नगर) तथा दिवस जी (नेहरू एंक्लेव)के सौजन्य से दिए गये। सम्मान प्राप्त करने के साथ ही प्रसिद्ध गायक किशोर जी ने उपस्थित बांधवों के आग्रह पर दो चार गीत एवं होली गायन की प्रस्तुति दी,इस दौरान पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा।इसके बाद पुत्तन जी एवं दिलीप जी ने होली टाइटल की प्रस्तुति दी।

इसके बाद पुरुषो ने जोरदार एवं शानदार ढोलक- मंजीरा के साथ होली गायन की प्रस्तुतियां दी, जिसमें शैल जी, नवीन जी (विकास नगर), अमिताभ अन्नू जी,हरीश जी,सौमेन्द्र जी, अर्णव जी,अमित जी के अलावा प्रसिद्ध होली गायक सौरभ - राजीव ने भी हिस्सेदारी निभाई।

कार्यक्रम के मध्य में मंत्री नमन जी अपना वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि अध्यक्ष अजय जी के नेतृत्व में कोषाध्यक्ष केयूर जी के साथ मंडल में पहली बार युवा टीम ने जिम्मेदारी ली, लखनऊ समाज के भरपूर सहयोग एवं समर्थन से हमारी टीम ने हरियाली तीज, पिकनिक के सफल आयोजन के बाद आज होली मिलन को आयोजित किया हैं। इसके लिए नमन जी ने सभी बांधवों का सहयोग एवं समर्थन के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया। मंत्री ने आगे कहा कि यदि अनुभवहीनता से हमारी टीम से कुछ कमियां रह गई हो तो हम क्षमा प्रार्थी है, मंत्री ने भविष्य में और मनोयोग से समाज सेवा करने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम के अंत मे अध्यक्ष अजय जी ने सभी आगंतुको को उत्साहवर्धन एवं सहयोग के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आगामी वर्ष में हमारी टीम सभी कार्यक्रमों को अधिक योजनाबद्ध एवं संगठित रूप से आयोजित करेंगी। सभी से सहयोग

एवं समर्थन का आग्रह करते हुए अजय जी ने सबको भोजन करने के बाद ही प्रस्थान करने के लिए कहा। सभी ने सुंदर व्यवस्था एवं स्वादिष्ट भोजन के लिए मंडल कार्यकारिणी को धन्यवाद दिया।।

– **दिलीप सिकंदरपुरिया,** लखनऊ

मुंबई

बंधुवर पालागन।

रविवार दिनांक 07-04-2024 को

श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय मुंबई द्वारा बड़े हर्षोल्लास के साथ होली मिलन समारोह का आयोजन विले पारले स्थित होटल पारले इंटरनेशनल में किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण थे।

महासभा की नव निर्वाचित सभानेत्री * श्रीमती उषा चतुर्वेदी को हमारे अध्यक्ष श्री विवेक जी,उपाध्यक्ष श्री पंकज जी और कोषाध्यक्ष श्री पीयूष जी ने स्मृति चिन्ह और शाल उड़ा कर उनका सम्मान किया।उसके बाद उन्होंने महासभा के पूर्व सभापति श्री भरत चतुर्वेदी और श्री राजेंद्र आर चतुर्वेदी का भी सम्मान किया।

ब्रिज और फिल्म जगत के प्रसिद्ध गायक श्री अवधेश जी ने अपने होली गायन से वो समा बांधा कि सभी मंत्रमुग्ध हो गए और उनका साथ दिया हमारे अपने श्री प्रसून पांडे और मुंबई की *लेडीज़ स्पेशल ने मैनपुरी की होली की प्रस्तुति की। सभानेत्री श्रीमती उषा चतुर्वेदी ने भी एक रसिया गा कर माहोल में चार चाँद लगा दिए। इसके अतिरिक्त हमारे *मुंबई समाज * के अध्यक्ष और कार्यकारिणी ने आए हुए समस्त बांधवो और उनके परिवारों को होली की शुभकामनाएँ प्रदान की। अंत में स्वादिष्ट भोजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। आप सभी की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और आनन्दमय बना दिया। समस्त मुंबई माथुर चतुर्वेदी समुदाय डॉ महेंद्र , पीयूष जी , देवेंद्र जी , निमिशा जी ,आशीष और समस्त कार्यकारिणी के सहयोग से अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हार्दिक धन्यवाद देती है।

– **मधुपम चतुर्वेदी,** सचिव

गाजियाबाद

शारद, शेष, महेश बखानत उनहु पे

हरि गति जानी ना जाए

इस वर्ष श्री राम प्रभु संपूर्ण सनातन संस्कृति की इच्छाओं के अनुरूप अपने धाम में पुनः प्रतिष्ठित हुए है, हम सभी निश्चित रूप

से भाग्यवान है जिन्होंने किसी न किसी रूप में उन सुरम्य पलों को देखा अनुभव किया, जिस आत्मिक आनंद की अनुभूति हुई, वह निश्चित ही हम सभी के लिए चिरस्मरणीय रहेगी ।

लंका जीत राम घर आए घर घर बजत बधाई :- प्रभु श्री राम विजय के पर्याय है फिर भी ऐसी अनुभूति हुई जैसे प्रभु श्री राम पुनः विजयी हुए और सालों से चली आ रही हम सभी की प्रतीक्षा को विराम मिला ।

प्रभु श्री राम के अपने धाम में विराजमान होने के उत्सव के साथ साथ ही होली के आनंद का समय भी प्रारंभ हो गया, इस बार का बसंत हम सभी के लिए आनंदमय रहे ऐसी ही अभिलाषा के साथ रंग झर बरसे की पुस्तक बसंत पंचमी से चतुर्वेदी बांधवों के हाथों में दिखाई देना प्रारंभ हो गई, होली गायन के विधा को प्रेम करने वाले सदैव की भांति उत्साहित हैं प्रभु का त्योहार मनाने और होलियों के रूप में प्रभु का गुणगान करने के लिए ।

विगत तीन वर्षों से हमारे गुलमोहर गार्डन राज नगर एक्सटेंशन में भी होली गायन का कार्यक्रम प्रभु की कृपा और स्वजनों के प्रेम से आयोजित किया जा रहा है आदरणीय लोकेंद्र जी (फरौली) और आदरणीय नूतन जी (मैनपुरी) के निर्देशन में यह कार्यक्रम निश्चित रूप से आनंदमय रहा है, इस वर्ष दिनांक १०/०३/२०२४ को फिर से उसी उत्साह के साथ इसका आयोजन किया गया, इसी कार्यक्रम की अनुभूति प्रेषित कर रहा हूं.....

सुबह से आने वाले स्वजनों के इंतजार और कार्यक्रम की तैयारियों में बस 2 बजने का इंतजार किया जा रहा था जोकि तय समय था लेकिन उत्साहित गायकों के समय पर आगमन से कार्यक्रम का मंगलाचरण सुमंगल दाहिने होरी खेलत राम नरेश के साथ आगरा से पधारे श्री संजीव जी (संजू बाबा) द्वारा कुछ १.३० बजे ही प्रारंभ हो गया, होली गायकी के साथ ढोलक बजाने की निपुणता संजीव जी को विशेष बनाती है, उनका सहयोग करते है श्री अनुपम जी श्री गौरव जी.

आदरणीय श्री अशोक जी (होलीपुरा/फरीदाबाद), अशोक जी (होलीपुरा /लोनी), गोकरण जी (तालगांव/नोएडा), चंद्रकांत जी (होलीपुरा/आगरा), लोकेंद्र जी (फरौली-गुलमोहर), नूतन जी(मैनपुरी-गुलमोहर), मनीष जी (होलीपुरा/दिल्ली), नलिन जी (होलीपुरा/नोएडा), धर्मेश जी (मैनपुरी/वैशाली), तरुण जी (फर्रुखाबाद/साहिबाबाद), गोपाल जी (मैनपुरी/ साहिबाबाद), विवेकजी मुक्की (पुरा/साहिबाबाद), रत्नेश जी (मैनपुरी/वैशाली), मुदित जी (मैनपुरी/दिल्ली), नीरज जी (होलीपुरा/जबलपुर), समीर

जी (होलीपुरा/भोपाल), अनुपम जी (होलीपुरा/आगरा), गौरव जी (होलीपुरा/आगरा), मुकेश जी (होलीपुरा/आगरा), नीरज जी चुन्नू (फरौली), प्रदीप जी (पुरा/साहिबाबाद), पंकज जी (होलीपुरा–गुलमोहर), जैसे दिग्गज होली गायकों के साथ युवाओं में शिवम (मैनपुरी), समीर जी (मैनपुरी/रायपुर), अभिनव (होलीपुरा), माधव (मैनपुरी), मनीष जी (फरौली–गुलमोहर), रिशव (होलीपुरा), दीपांशु (फरौली), आयुष (होलीपुरा) का जोश और उत्साह देखते ही बन रहा था रंग झर बरसे का रंग जीवंत अनुभव हो रहा था ।

संग नवल राधिका गोरी में मनीष जी का जोश और आनंद, होरी खेले लाल डफ बाजे ताल धमार पर नलिन जी की पकड़ , मांगे चंदा खिलौना पर मनीष जी, नीरज जी, संजीव जी, अनुपम जी, गौरव जी का समवेत स्वर, मैनपुरी भई लाल पर नूतन जी और सभी मैनपुरी गायकों का मस्त और उत्साही अंदाज आनंददायक और अतुलनीय था, लोकेंद्र जी द्वारा ऐसों की होरी में खेलोंगी डट के, नट नागर गोपाल कन्हैया, मुझ पर ना–ना रंग डार, ललन मोरी सिगरी चूनर रंग डारी, तरुण जी द्वारा हरमोनियम के साथ खेलें मसाने में होरी दिगंबर अद्भुत थी, धमार गायकी होली गायन की विशेष विधा है गोकरण जी, अशोक जी (दोनों), नलिन जी, मनीष जी, संजीव जी, नीरज जी के अनुभवी निर्देशन में शशिबद्नी मृगनयनी, लाडली मान ना करिए, गोरी गोकुल गांव न बसिए जैसी धमार भी अपनी प्रासंगिता को सिद्ध कर रही थीं, श्री समीर जी ने एक नई विधा के अंतर्गत ब्रज के कुछ अनूठे छंद सुनाए, जिसके बाद शुरू की होली कुछ अंश यहां प्रस्तुत है :

अति कोमलता पे सलोनी छटा, छवि श्यामलता चित चोरन के।।
बलिहारी तुम्हारी बड़ी अखियाँ, तिरछी तकियाँ दृग कोरन के।।
मुख माधुरता पे गुपाल हँसी, अंग तोरन भोये मरोरण के।।
नन्द लाल कहूं तुम होते लली, तो गले कट जाते करोरण के।।

मैनपुरी के श्री धर्मेश जी, मुदित जी, रत्नेश जी, शिवम जी ने रसिया और कई अन्य होलियां गा कर आनंद को और भी रंगारंग बना दिया, युवा गायकों में श्री अभिनव और श्री आयुष की होलियाँ सुन कर होली गायन की विधा का भविष्य उज्वल रहेगा ऐसा विश्वास मन में आया ।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के पूर्व सभापति एवं संरक्षक आदरणीय श्री कमलेश जी एवं आदरणीय श्री प्रदीप जी ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर सभी गायकों के उत्साह की सराहना की एवं शुभकामनाएं दी । महिलाओं का सहयोग एवं उत्साह दर्शनीय था आगे के कार्यक्रमों में महिलाओं के होली गायन का भी प्रबंध किया जाय, ऐसा विचार प्रस्तुत किया गया जिसके लिए आगामी कार्यक्रम में व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी, ऐसा विश्वास है । उपस्थित गायकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया कार्यक्रम संपन्न होने पर सभी स्वजनों ने सामूहिक रूप से भोजन का आनंद लिया । साथ ही साथ हम आभारी हैं श्रीमति राशी जी (तरसोखर/गाजियाबाद) 'माखन भोग केटरिंग' के, जिन्होंने स्वरुचि भोजन की व्यवस्था को बहुत ही सहज रूप से संचालित किया। प्रभु श्री राम और कृष्ण जी की लीलाओं का वर्णन और उनका गुणगान हमारी होलियों के रूप में सदैव होता रहे, होली गायन के इस तरह के कार्यक्रम निरंतर आयोजित होते रहें ...रंग झर बरसती रहे

होली की हार्दिक शुभकामनाएं एवं पालागन
कमल चतुर्वेदी (होलीपुरा/गाजियाबाद)
गुलमोहर चतुर्वेदी परिवार

बरेली

दिनाँक 7.4.2024 को बरेली के होटल ओबेरॉय में बरेली चतुर्वेदी शाखा सभा के बैनर तले बान्धवों का होली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया..इस अवसर पर सभी बान्धवों द्वारा उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हुए उपस्थित पुरुष और महिला मंडली द्वारा होली गीतों, एवं नृत्य के माध्यम से कार्यक्रम में चार

चाँद लगा दिए..बच्चों ने भी बढ़ चढ़ कर अपनी सहभागिता दर्ज की...इस अवसर पर लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत पहले मतदान फिर जलपान का संकल्प भी लिया गया...अंत में सुरुचिपूर्ण भोजन के साथ सभी बान्धवों का आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में श्री विनय कुमार चतुर्वेदी, राकेश चतुर्वेदी (चुनचुन), प्रभात चतुर्वेदी, आर के चतुर्वेदी (दीपक), मुदित चतुर्वेदी, विश्वनाथ चतुर्वेदी, बसंत चतुर्वेदी, देवम चतुर्वेदी, देवेन्द्र चतुर्वेदी, शैलेन्द्र चतुर्वेदी, रजत, बंटू चौबे आदि उपस्थित रहे।

गुरुग्राम

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा गुरुग्राम द्वारा १७ मार्च २०२४ को सामाजिक बंधुओ सहित होली मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत गुरुग्राम सभा की सदस्यो ने श्री गणेश वंदना उपरांत दीप प्रज्वलन द्वारा की की गई , दीप प्रज्वलन मुख्य अतिथि श्रीमति उषा चतुर्वेदी, विशिष्ठ अथिति श्री शशांक जी, सम्मानित अतिथि श्री मुनीन्द्र नाथ जी , श्री मुकेश चतुर्वेदी जी , डा. निशीथ जी और श्री अखिलेश चतुर्वेदी जी द्वारा किया गया, उपरांत शाखा सभा अध्यक्ष श्री अखिलेश जी, सचिव श्री अभयराज जी द्वारा मुख्य अतिथि श्रीमती उषा जी चतुर्वेदी – अध्यक्ष श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, सम्मानित

अतिथि श्री भरत जी – पूर्व अध्यक्ष एवम संरक्षक महासभा, विशिष्ठ अतिथि श्री शशांक जी – संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका, सम्मानित अतिथि श्री मुकेश जी –अध्यक्ष आगरा सभा एवं श्री मुनींद्र नाथ जी एवम डॉक्टर निशीथ जी का श्री फल और रामचरित मानस देकर सम्मान किया गया। नवनिर्वाचित महासभा अध्यक्ष श्रीमती उषा जी को माल्यार्पण कर गुरुग्राम के अन्य बंधुओ द्वारा भी सम्मानित किया गया। तत्पश्चात सभी अतिथियों ने समाज और सभा के प्रति अपने अपने विचार रखे।

होली मिलन का कार्यक्रम हो और होली गायन न हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता। इसी क्रम में श्री धर्मेश जी, श्री अभय (बिट्टू जी), श्री अखिलेश जी, श्री मनोज जी, श्री मुदित मिश्रा जी, श्री अन्वेष मिश्रा जी, श्रीमती शिप्रा जी, श्रीमती विभा जी, श्रीमती ऋचा जी, श्रीमती अपूर्वा जी, श्रीमती अनुश्री जी और श्रीमती सुरभि जी आदि ने ढोलक और मंजीरों के साथ होली गायन कर अपनी पारम्परिक होलियाँ प्रस्तुत कर सभी बांधवो को बृज की याद दिला दी जिसके कारण हर तरफ माहौल रंगारंग बन गया इसी क्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती उषा जी अपने आप को नही रोक पायीं और होली गायन कर शमा बाँध दिया और होली गायन कर सभी का पूर्ण साथ दिया। होली गायन के समय एक तरफ होली गायन चल रहा था तो दूसरी तरफ गुरुग्राम सभा के सदस्यों ने सभी उपस्थित जनों के साथ फूलो की होली खेली जिसे सभी ने सराहा।

कार्यक्रम को स्मृतिपूर्ण बनाने हेतु छायांकन का कार्य श्रेयस चतुर्वेदी द्वारा सफलता पूर्वक किया गया। होली गायन उपरांत गुरुग्राम शाखा सभा अध्यक्ष श्री अखिलेश जी द्वारा सभी का धन्यवाद देते हुए गुरुग्राम सभा की नव निर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती नीतिका चतुर्वेदी जी का स्वागत करते हुए परिचय दिया, श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम की नव निर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती नीतिका चतुर्वेदी को वर्तमान अध्यक्ष श्री अखिलेश जी और मुख्य अतिथि श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी ने पुष्प गुच्छ दे कर शुभकामनाएं और हार्दिक बधाई दी। इसी क्रम में उपस्थित सभी सामाजिक सदस्यों ने भी शुभकामनाए प्रेषित की। गुरुग्राम शाखा सभा द्वारा सभी पूर्व अध्यक्षों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए श्रीमती उषा जी की ने सभी सदस्यो को बधाई दी। उषा जी ने आशीर्वाद देते हुए नवनिर्वाचित अध्यक्ष जी को शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में गुरुग्राम के अलावा दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद और आगरा से भी बांधव सम्मिलित हुए थे और अध्यक्ष जी ने गुरुग्राम सभा की तरफ से सभी को धन्यवाद दिया। सफल होली मिलन कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अखिलेश चतुर्वेदी जी ने और सफल संचालन अभय राज जी ने किया। अंत मे सभी बंधुओ द्वारा सुरुचि भोज का ठंडाई और गुजिया के साथ आनंद लिया गया। अधिकतर आगंतुकों का मानना था की इसी प्रकार से और अधिक सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन से सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं और आपस मे परिचय बढ़ता है। सभा ने इस सुझाव को भविष्य में एजेंडे मे ऊपर रखने का निर्णय लिया है जिससे की अधिक से अधिक कार्यक्रम आयोजित हो सकें।

पालागन सहित

– अनुराग चतुर्वेदी/ अभयराज चतुर्वेदी

बैंगलोर

दिनाँक 7 April 2024 को बंगलुरु चतुर्वेदी समाज का होली मिलन कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस आयोजन के लिए श्री मृदुल जी

(पूरा / बैंगलुरु) / श्री हेमंत जी (पुरा/बैंगलुरु) / श्री मधुर जी (फरौली / बैंगलोर) एवम श्री नवीन जी (फरौली / बैंगलोर) का विशेष आभार। जिनके सानिध्य और मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसमें लगभग 160 चतुर्वेदी बंधुओं की उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मैं यहाँ की महिलाओं का भी विशेष योगदान रहा जिनके होली गायन से वहाँ उपस्थित सभी स्वजनों ने भरपूर आनंद उठाया और उसके बाद पुरुष वर्ग ने होली गायन से सभी को रोमांचित कर दिया, और अंत मैं सुरुचि पूर्ण भोजन के साथ सभा संपन्न हुई।

कानपुर

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर के द्वारा कानपुर चतुर्वेदी समाज का होली मिलन समारोह दिनांक 31 मार्च 2024 को बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी सार्वजनिक चतुर्वेदी धर्मशाला साकेत नगर कानपुर में संपन्न हुआ।

*कानपुर समाज के चतुर्वेदी बंधवों की उपस्थिति उत्साह जनक रही मुख्य रूप से सभा के संरक्षक श्री अविनाश भैया, श्री विष्णु स्वरूप पांडे जी तथा चुन्ना भैय्या, गुड्डा भैया, आशुतोष आशु, प्रणब ,अनूप, अनुराग टिंचू, मनोज ,प्रभात, शतदल चतुर्वेदी तथा समाज के अन्य गणमान्य व्यक्ति, कार्यकारिणी सदस्य मनोज

चतुर्वेदी, प्रभास जी मुन्ना आदि और समाज की मातृशक्ति की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री माथुर चतुर्वेदी सभा के अध्यक्ष श्री स्वतंत्र प्रकाश, महामंत्री प्रवेश चतुर्वेदी, नवीन, वरिष्ठ

उपाध्यक्ष श्री लोकेंद्र तथा संयोजक अनीश, प्रशांत ,भारत चतुर्वेदी व कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलित कर तथा गणेश जी की मूर्ति पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

अध्यक्ष व महा मंत्री के द्वारा धर्मशाला प्रांगण में स्थित समाज की तीन महान विभूतियां की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया गया।

गणेश बंदना पर कुमारी आयुषी पुत्री श्री अनुज चतुर्वेदी किदवई नगर के द्वारा सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया गया*। उसके पश्चात होली से ही संबंधित गाने पर ही कुमारी यशी पुत्री फरेंद्र नाथ चतुर्वेदी के द्वारा सुंदर नृत्य कर उपस्थित जन्म मानस का मन मोह लिया।

महिलाओं में होली गायन श्रीमती दीपाली, श्रीमती शिखा, श्रीमती मीता , श्रीमती अंजलि, श्रीमती प्राची, श्रीमती निधि ,श्रीमती आकांक्षी,श्रीमती पिंकी, श्रीमती अलका, श्रीमती आभा के द्वारा सुंदर होली गायन प्रस्तुत किया गया। पुरुषों के द्वारा श्री अजीत जी, श्री दिव्यम, श्री संजीव और मैनपुरी के श्री महेंद्र नाथ जी के द्वारा होली गायन प्रस्तुत किया गया। श्रीमती आकांक्षी के साथ होली गायन में उनके पुत्र गगन चतुर्वेदी ने ढोलक पर संगत की*।

*होली गायन में बच्चे भी किसी से पीछे नहीं रहे बच्चों में विराट, कुमारी मिशीता, कुमारी गौरंगी, कुमारी सिद्धि, कुमारी नव्या द्वारा होली गायन कर उपस्थित जनमानस का मन मोह लिया। अंत में सामूहिक नृत्य समाज की बच्चियों कुमारी सिद्धि, कुमारी भूमि, कुमारी निकिता, कुमारी टीया, कुमारी शुभी, कुमारी खुशी के द्वारा सामूहिक नृत्य प्रस्तुत कर फूलों की होली खेली गई।

श्रीमती प्रीति चतुर्वेदी के द्वारा कार्यकारिणी सदस्यों को टाइटल दिए गए ,इस बार मुख्य आकर्षण लकी ड्रा का भी रहा लकी ड्रा विजेता कुमारी आर्ची,श्रीमती सुषमा, श्री संजय ,श्री पंकज, श्री आशुतोष जी रहे। कार्यक्रम का सुचारू संचालन श्रीमती मोहिता जी के द्वारा किया गया। अंत में स्वादिष्ट भोजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

– **प्रवेश चतुर्वेदी,** महामंत्री,
श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, कानपुर

भोपाल

पालागन,हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेदी समाज भोपाल का होली मिलन समारोह श्री माथुर चतुर्वेदी सभा शाखा भोपाल द्वारा और भी भव्य रूप से 31/03/2024 को अयोजित किया गया। सर्वप्रथम सभापति श्रीमती उषा जी एवं अंजना जी ने दीप प्रज्वलित कर तथा श्रीमती गार्गी जी ने गणेश वंदना गाकर कार्यक्रम की शुरुआत की।

कार्यक्रम में सभी आयु की महिलाओं ने एक से बढ़कर एक होलियां गाई। विशेषकर श्रीमती पद्मा जी, नीलम जी, सीमा जी, सुमन जी, सीमा जी, अंजना जी, सुनीता जी, नीता जी, शिवांगी जी, रश्मि जी एवं स्वयं सभापति श्रीमती उषा जी ने लगातार 3 घंटे होली गायन के पश्चात पुरूषों को होली गायन का अवसर प्रदान किया और श्री भरत जी, राजेश जी, एवं अन्य का साथ बाल कलाकार आर्यन सुपुत्र समीर ने कार्यक्रम का समा बांध दिया।

इस दौरान लगातार ठंडाई और स्नैक्स का दौर भी चलता रहा। तत्पश्चात सभापति श्रीमती उषा जी का सम्मान सभी उपस्थित महिलाओं द्वारा माल्यार्पण कर किया गया। विशेष रूप से मौजुद श्रीमती विमला जी, शारदा जी, इति जी एवं अन्य ने सभापति को आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर श्री पंकज जी ने जबलपुर से एवं श्री सर्वेश जी ने सीहोर से परिवार सहित आकर इस कार्यक्रम का आनंद उठाया।

अंत में स्वादिष्ट भोजन का सभी लोगों द्वारा आनंद उठाया गया।

भोपाल कार्यकारिणी के इस भव्य एवं सफल आयोजन की सभी भोपाल वासियों ने दिल से प्रशंसा की।

– **सुमंत चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा शतप्रति शत मतदान करने की अपील लांगुरिया गायन के कार्यक्रम में

आज दिनांक 14 अप्रैल को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा एवं भोपाल चतुर्वेदी गुइयाँ के तत्वाधान में। लांगुरिया लोकगीत के गायन का कार्यक्रम आयोजित किया गय। इनमें मुख्य से माता के लोकगीत लांगुरिया का गायन किया गया। चतुर्वेदी समाज द्वारा इस तरह समाज की सांस्कृतिक धरोहरों को संवर्धित, संयोजित करने का कार्य किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन समाज की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

संचालन में उनका सहयोग भोपाल की चतुर्वेदी महिलाओं के व्हाट्सएप समूह के श्रीमती शिवांगी चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

श्रीमती उषा चतुर्वेदी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ने अपने उद्बोधन मे शतप्रतिशत अपने मताधिकार का प्रयोग करने

का आह्वान किया। तथा लोकतंत्र के इस महायज्ञ में मतपत्र की संविदा डालकर पुण्य लाभ प्राप्त करने का आवाहन किया। कोई भी बहन मतदान करने से वंचित न रह जाए उसे साथ ले जाने का आवाहन भी किया।

कार्यक्रम का आभार महासभा के राष्ट्रीय मंत्री श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी द्वारा किया। कार्यक्रम मे महासभा के संरक्षक श्री भरत चतुर्वेदी, समाज की मासिक पत्रिका के संपादक श्री शशांक चतुर्वेदी, महासभा के कोषाध्यक्ष श्री महेश चतुर्वेदी विशेष रूप उपस्थित थे। समाज की महिलाओं ने इस बढ़चढ़ की हिस्सेदारी की गई। इसमें छोटी सी बेटी सुश्री वृन्दा (कटनी) ने गायन के साथ वादन का कार्य बड़ी तन्मयता से एकाग्रचित्तता से किया गया। कार्यक्रम के गायन में चित्रा जी, शिवांगी जी,शालिनी जी,पदमरेखा जी, मनीषा जी, विनीता जी, बबीता जी, नीता जी ब आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम में 12 राज्यों व 45 शहरों से बहनों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। यह कार्यक्रम आन लाइन गूगल मीट पर आयोजित किया गया था। अंत में मां दुर्गे मां की आरती कर कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग सुश्री शिविका द्वारा प्रदान किया गया।

आगरा

रजिस्टर्ड आगरा सभा द्वारा कार्यकारिणी का एक छोटा सा होली मिलन कार्यक्रम होटल पूनम प्लाजा, दयाल बाग रोड आगरा पर आयोजित किया गया। जिसमें लगभग सभी बंधुओ ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। सभा में महामंत्री श्री राकेश पाठक जी एवम उनके भाई ने होली गायन कर समा बांध दिया। उपस्थित सभी बंधु होली गायन में शामिल हुए। सभा समाप्ति के उपरांत अध्यक्ष जी द्वारा आयोजित स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया गया। अंत में सभी ने आयोजन एवम भोज के लिए अध्यक्ष जी को धन्यवाद दिया।

– **मुकेश चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

फरीदाबाद

फरीदाबाद शाखा सभा ने धूम धाम से मनाया होली मिलन समारोह 2024 कार्यकारिणी के चुनाव में अध्यक्ष के पद पर निर्विरोध बने रहे श्री सुशील कुमार चतुर्वेदी। रविवार 31 मार्च 2024 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा फरीदाबाद शाखा द्वारा होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह इस शाखा सभा का लगातार तीसरा होली मिलन समारोह था जो बहुत धूम धाम से पारंपरिक होली गायन के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में होली गायन के अलावा सभा की कार्यकरिणी के चुनाव भी होने थे। मार्च 2021 में गठित शाखा सभा ने दो वर्ष का कार्यकाल अध्यक्ष श्री सुशील कुमार चतुर्वेदी, फरौली/फरीदाबाद के कुशल मार्गदर्शन में पूर्ण किया। चुनाव की पूर्व घोषणा हो जाने के बाद भी किसी भी सदस्य ने नए अध्यक्ष के चुनाव के लिए अपना नाम नहीं दिया। इस स्थिति में सभी उपस्थित सदस्यों ने एकमत से श्री सुशील चतुर्वेदी को ही अध्यक्ष पद पर बने रहने के लिए आग्रह किया। सचिव श्री संजय चतुर्वेदी ने घोषणा की कि यह निश्चित किया गया कि श्री सुशील कुमार चतुर्वेदी ही अध्यक्ष पद पर नए कार्यकाल के लिए चयनित हैं। हालाँकि उनकी कार्यकारिणी के भंग हो जाने की स्थिति में उन्हें अपनी नई कार्यकारिणी की घोषणा करनी होगी। श्री सुशील कुमार चतुर्वेदी ने सभी सदस्यों को उनमें विश्वास प्रदर्शित करने के लिए धन्यवाद् देते हुए विश्वास जताया कि जिस प्रकार पिछले कार्यकाल में उनका प्रयास समाज को जोड़ने में रहा, वही प्रयास वे आगे भी करते रहेंगे। इसी के साथ उन्होंने कहा कि नई कार्यकारिणी की घोषणा शीघ्र ही की जाएगी।

चुनाव प्रक्रिया के उपरांत होली गायन का श्री गणेश श्री शैलेन्द्र चतुर्वेदी, फरौली/फरीदाबाद द्वारा मंगलाचरण द्वारा किया गया। इसके उपरांत श्री अशोक चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष, होलीपुरा/फरीदाबाद द्वारा पारंपरिक होली गायन शुरू किया गया। उनका साथ दिया श्री सुशील कुमार चतुर्वेदी, श्री शिवकुमार चतुर्वेदी, श्री प्रदीप चतुर्वेदी, श्री शैलेन्द्र चतुर्वेदी आदि ने। महिला सदस्यों ने भी बढ़ चढ़कर होली गायन में साथ दिया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित दिल्ली और गाज़ियाबाद से आए श्री मनीष चतुर्वेदी, श्री विपिन पाण्डे, श्री अशोक पांडे (लोनी), श्री अभिनव, श्री विमल चतुर्वेदी और श्री लोकेन्द्र चतुर्वेदी ने होलियों का ऐसा समां बांधा कि समय कम पड़ गया। श्री सौरव चतुर्वेदी विशेष रूप से हैदराबाद से आकर फरीदाबाद होली मिलन में शामिल हुए। इसके अलावा उपस्थित परिवारों में संरक्षक डॉ के एन चतुर्वेदी (फ़रिज़ाबाद), श्री भुवनेश्वर चतुर्वेदी (फरौली), श्री दिनेश चन्द्र चतुर्वेदी (बिजकौली/बाह), श्री राजकुमार चतुर्वेदी, श्री प्रदीप चतुर्वेदी, श्री शैलेन्द्र चतुर्वेदी, श्री प्रवीन चतुर्वेदी (फरौली), श्री कमलेश चन्द्र चतुर्वेदी (गोपाल जी), श्री आशुतोष चतुर्वेदी, श्री गौरव चतुर्वेदी, , श्री संजय चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री सुनील मिश्रा, श्री हेमंत कुमार पाण्डे आदि। इसके अलावा कार्यकारिणी सदस्यों में अध्यक्ष श्री सुशील कुमार चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष श्री अशोक चतुर्वेदी, सचिव श्री संजय चतुर्वेदी, श्री शिवकुमार चतुर्वेदी, श्री संजू चतुर्वेदी, श्री प्रवीन चतुर्वेदी (मथुरा), श्री सुनील मिश्रा और श्री रुचिर चतुर्वेदी प्रस्तुत रहे। युवाओं में असित, अंकित, राघव, हर्ष वर्धन, अक्षत, निकुंज, अनुराग आदि ने भी कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

महिलाओं ने भी बढ़ चढ़कर होली मिलन कार्यक्रम में अपनी होली गायन प्रतिभा का बखूबी प्रदर्शन करते हुए इस कार्यक्रम को और अधिक यादगार बना दिया। गायन में प्रमुख रूप से श्रीमती शारदा, श्रीमती सुनंदा, श्रीमती साधना, श्रीमती कंचन, श्रीमती

गरिमा, श्रीमती शालिनी, श्रीमती पारुल, श्रीमती निधि, श्रीमती सीता, श्रीमती शालिनी (फरौली), श्रीमती मंजुल, श्रीमती मंगला, श्रीमती पूनम, श्रीमती सीमा, श्रीमती अपूर्वा, श्रीमती निवेदिता, श्रीमती हनी (हेमलता), श्रीमती नीरू, श्रीमती रेनू, श्रीमती रजनी, श्रीमती अंजलि, श्रीमती सोनल, श्रीमती मीना, श्रीमती हर्षिता, श्रीमती अर्पिता, श्रीमती तान्या आदि ने भाग लिया। कार्यकर्म के आरम्भ में स्वादिष्ट ठंडाई और नाश्ते के लिए और बाद में सुरुचिपूर्ण स्वादिष्ट भोजन के लिए माखन भोग कैटरर के श्री गौरव चतुर्वेदी का सचिव श्री संजय चतुर्वेदी ने धन्यवाद् ज्ञापन द्वारा सम्मान किया। इस अवसर पर गुडगाँव, दिल्ली , नॉएडा और गाज़यिाबाद से आये अतिथियों ने भी कार्यक्रम की शोभा बढाई। कार्यक्रम में कुल सौ लोंगों की उपस्थिति रही, जो फ़रीदाबाद के लिए एक रिकॉर्ड है। कार्यक्रम के दौरान छोटे बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और सभी बच्चों को उत्साहवर्धन के लिए पुरस्कृत किया गया।

पुरा कन्हैरा

24 मार्च 2024 को चतुर्वेदी माथुर महासभा की प्रथम महिला सभापति श्रीमती उषा भरत जी चतुर्वेदी का शाल व श्रीफल स्मृति चिन्ह देकर चतुर्वेदी महिलाओं ने सत्कार किया। जिसमें प्रमुख अतिथि श्रीमती अनुपमा जी व श्रीमती बीना चतुर्वेदी, मनीषाजी, साधनाजी, रंजनाजी, नीताजी रजनीजी, कंचननजी, चित्राजी, हीमा अन्य महिलाओं ने स्वागत किया तथा होलीपुरा, पिनाहर, तालगांव, बाह की महिलाओं ने भी उनका पुष्पमाला से सत्कार किया गया। इसी क्रम में श्रीमती नितीका अभयराज गुडगांव चतुर्वेदी सभा की अध्यक्ष बनने पर पूर्व अध्यक्ष डॉ. प्रदिप चतुर्वेदी संरक्षक भरतजी व प्रमुख अतिथी अनुपमा प्रदीप चतुर्वेदी व अन्य महिलाओं ने उनका सत्कार किया। साथ ही श्री ज्ञानेशजी हैद्राबाद चतुर्वेदी सभा के अध्यक्ष बनने पर उनका स्वागत डॉ. प्रदीप, श्री भरतजी, हेमंतकुमार, भुवनेशकुमार, नागेन्द्र नाथ, पंकज, पियुष, दिलीप, सुभाष, हितेश, गिरजेश, नीरज, देवांश, प्रणव ने पुष्पमालाओं स्वागत किया साथ ही संजु प्रदीप चतुर्वेदी (गाजीयाबाद) चतुर्वेदी समाज के अध्यक्ष बनने पर उन्हें सम्मान व बधाई दी गई। पुरा कन्हैरा के लिये यह गौरव की बात है की चतुर्वेदी महासभा की प्रथम महिला अध्यक्षा व गुडगांव, हैदराबाद, गाजियाबाद शाखाओं के अध्यक्ष पुरा कन्हैरा के बनने पर भदावर के लोगों के द्वारा चतुर्वेदी बांधवों व महीलाओं ने बधाई दी तथा प्रतीवर्षानुसार इस वर्ष भी बाबा बंशीधरजी की स्मृती में १९ वर्षों से होलीमीलन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापती बनने पर सत्कार किया व शताब्दी वर्ष में महासभा के संरक्षकों श्री सतीश चतुर्वेदी, श्री भरतजी चतुर्वेदी, श्री त्रिभुवन नाथजी का अध्यक्ष डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, भरतजी, , आभाजी, उषाजी का सत्कार व स्मृति चिन्ह देकर सम्मान व स्वागत किया है। साथ ही होलीगायन में विशिष्टता प्राप्त समाजीक कार्य करने वालों का सत्कार कर पुरानी परंपराओं को जीवंत रखने का कार्य कर रहे है। यह सभी ग्राम वाशीयों के सहकार्य से करते है। इस कार्यक्रम में होलीपुरा, तालगांव, पिनाहर, बाह, बटेश्वर, आगरा से चतुर्वेदी बाघव, महिलाओ व बच्चों के साथ आकर इस समारोह को सफल बनाकर साथ ही सहयोग देकर नई उर्जा प्रदान करते है। इस कार्यक्रम का संचालन देवेन्द्रनाथ ने किया।

– **भुवनेशकुमार चौबे,** गोदिया

नोएडा

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा नोएडा / ग्रेटर नोएडा का 8वां होली मिलन कार्यक्रम दिनांक 31 मार्च 2024 को सेक्टर 82 विवेक विहार के कम्यूनिटी हाल में बड़े ही धूम धाम से सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम की तैयारियां लगभग 1 महीने पूर्व से प्रारंभ हो गई थी । कार्यकारिणी के सभी सदस्यों आदरणीय पुष्पा जी, अरविन्द जी , धनंजय जी, ज्ञानेंद्र जी, नलिन जी, मुनीन्द्र जी, पुलकित जी सभी ने सभा के अध्यक्ष श्री विष्णु कान्त जी के साथ मिल कर बहुत बारीकी से सभी तैयारियां की थी। नियत दिन पर हाल में जिसका नवीनीकरण कुछ दिन पूर्व ही हुआ था, सुबह से ही लोगों का आगमन आरंभ हो गया था । सभी के दिलों में अपनों से मिलने की उमंग और उत्साह था। सबसे पहले आने पर सभी का चंदन टीका लगा कर स्वागत किया गया। फिर स्वल्पाहार,(पांच प्रकार के पकोड़े, जलेबी और ठंडाई) के लिए आमंत्रित किया गया।

तत्पश्चात कार्यक्रम की शुरुआत हुई।बेटी मानवी ने कार्यक्रम के संचालन का दायित्व बड़ी खूबी से संभाला। कार्यक्रम का आरंभ बेटी मानवी ने अपनी मधुर आवाज में गणपति वंदना से आरंभ किया। तदानंतर ले.ज. विष्णु कान्त जी को स्वागत भाषण के लिए सादर आमंत्रित किया गया । विष्णु कांत जी ने सभी बांधव, भगिनी , बाल गोपालों का स्वागत करते हुए कहा कि नोएडा के होली मिलन का सभी दिल्ली NCR के बांधवों को पूरे वर्ष इंतजार बना रहता है और उन्ही के प्रेम से और आशीर्वाद से नोएडा के होली मिलन में बांधवों की उपस्थिति संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही है । इस बार होली मिलन में युवाओं की संख्या भी विगत वर्षों से अधिक है जिससे हम सब उत्साहित हैं। हम सब को अपने कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए, हमारी परंपराएं ऐसे ही जीवित रहेंगी और आने वाली पीढ़ी हमारी 'सादा जीवन उच्च विचार' पहचान में गर्व लेंगी। सर्वप्रथम होली गायन का आरंभ कनक जी के द्वारा हुआ , फिर बेटी ईशा ने अपनी परंपरागत होली की एक अद्वितीय प्रस्तुति दी।

सादर पालागन।

प्रथम पुण्यतिथि

श्री संजीव चतुर्वेदी

25.06.1961 - 15.04.2023

पुण्य स्मरण

आज स्व॰ श्री संजीव चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री दिनेश चन्द्र चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती पुष्पा चतुर्वेदी (गोविंदपुरा/जयपुर) को गए एक वर्ष बीतने को हो रहा है। उनका यूँ असामयिक चले जाना हम सबके लिए बहुत मुश्किल रहा। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव कमोबेश सभी परिवारजनों पर हावी था। जहाँ एक ओर वे रूढ़ियों से मुक्त थे, वहीं दूसरी ओर पारंपरिकता के पक्षधर। तीक्ष्ण बुद्धि के साथ-साथ उनमें व्यावहारिकता और सामाजिकता भी पर्याप्त रूप से समायोजित थी। वे सदा से ही अत्यन्त जिज्ञासु प्रवृत्ति के धनी थे। नई टेक्नोलॉजी, नए विचार, नई जगहें - इन सबके प्रति उनका विशेष आकर्षण रहता था। वे न सिर्फ़ नए उपकरणों के बारे में जानना चाहते थे बल्कि उनका उपयोग करना भी भली-भाँति सीखते थे। कई बार तो अपने से उम्र में कहीं छोटे लोगों से भी बेहतर। नवीनता के प्रति उनका ये आग्रह उनकी आधुनिक सोच में भी दिखाई देता था। और इन सबसे कहीं ऊपर था उनकी उपस्थिति भर से उपजा विश्वास, कि सब कुछ नियंत्रण में है।अब भी, जब कभी वो विश्वास डिगता है, तो उन्हीं की स्मृति से प्रेरणा लेकर खड़े होते हैं। और इसीलिए, जीवन के इस कठिन मोड़ को भी, हम सभी, एक नई चुनौती की तरह अपनाने का प्रयास कर रहे हैं। (र.क्र. 2174)

कहानी

आश्रय

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी

रंजना नदी के किनारे बालू पर बैठी लहरों का आना जाना और उठना और गिरना एकटक हो कर देख रही थी। उसका ध्यान कहीं और था। सूरज डूब रहा था और उसकी परछाई नदी में पड़ रही थी। लहरों के उठने गिरने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे सूरज सर्दी से कांप रहा हो। पास में उसकी बेटी नीलम जिसकी उम्र 5 साल थी, बालू से घर बना रही थी। घर बनाती, फिर बिगाड़ देती। अच्छा नहीं बना, दूसरा बनाती हूं।

रंजना का ध्यान उधर गया, नीलम खड़ी थी और उसने एक पैर के ऊपर बालू का ढेर लगा लिया था।

बालू से पैर खींच लिया देखो मां अंधेरी गुफा बन गई।

हाँ नीलम देखा' रंजना बोली

घर बनाना आसान नहीं लेकिन तोड़ देना कितना आसान है। क्यों नीलम सही कहा' रंजना ने कहा

नीलम कुछ समझी नहीं। नीलम का घर बनाना और तोड़ देना खेल था लेकिन जीवन की यह कड़वी सच्चाई रंजना सहन नहीं कर पा रही थी। क्योंकि उसने अपना घर टूटते देखा है।

नीलम चलो घर चलते हैं अंधेरा हो रहा है दादी प्रतीक्षा कर रही होंगीऔर नीलम का हाथ पकड़कर लंबे-लंबे डग भरती हुई। वह घर की ओर चल पड़ी।

बेटी कहां चली गई थी अंधेरा हो गया दीया बत्ती कर लो मुझे तो कुछ मिला नहीं। रंजना ने कुप्पी जला कर रख दी। और नीलम और सास जी को खाना परोस दिया मां जी आप खा लो नहीं तो फिर आपको पचता नहीं है। नीलम तुम भी जल्दी खाओ और सो जाओ सुबह स्कूल जाना है।

कुप्पी बुझा दी ताकि मिट्टी का तेल बचा रहे रंजना ने नीलम को सुला दिया और सासू भी अपनी चारपाई पर लेट गई। रंजना लेट हो गई मगर उसे नींद नहीं आ रही थी करवटें बदलती रही। अंदर से बड़ी बेचैनी सी हो रही थी। वह उठकर दालान में बैठ गई शायद ठंडी हवा लगे तो नींद आ जाए।

नींद आंखों से उड़ चुकी थी। बीच में नीलम कुनबुनाई रंजना ने उसे फिर से सुलाने का प्रयास किया। मम्मी पापा कब आएंगे दिवाली पर पटाखे लाएंगे' नीलम बोल पड़ी लेकिन रंजना ने उसे अनसुना कर दिया और कहा सो जाओ।

वह नीलम को कैसे बताएं पापा की करनी जीवन से खिलवाड़, धोखा ,छल ,कपट सब कुछ तो किया। विश्वास की डोरी शादी के बाद घर में कदम रखते ही टूट गई। नीलम सो गई और रंजना फिर से दलान में बैठ गई हवा ठंडी थी आंखें बंद कर ली। आंखें बंद करते ही जीवन की बीती घटनाओं का चलचित्र आंखों के सामने घूमने लगा। किस तरह से पीयूष ने उसे धक्के मार कर घर से निकाला तथा बिलखती हुई नीलम को। घर से बेधर हो गयी। इतना छल और प्रपंच करता रहा पर मुझे आभास ही नहीं हुआ।गृहस्थी विश्वास पर टिकी रहती हैं।डोर टूटी परिवार बिखरा।

मोबाइल की रिंग टोन अभी भी कानों में गूंज रही है। उस दिन पियूष गलती से मोबाइल भूल गया था। मोबाइल की रिग टोन जिन्दगी भर नही भूल सकती। गाना बज रहा था 'दुनियाँ एक नम्बरी मै दस नम्बरी।

उसे शादी के पूर्व की घटना याद आई। वह कॉलेज से लौटी थी। कमरे में भीड़ दिखाई दी तो वह घबरा गयी। बाबूजी बदहवास से लग रहे थे, तथा मां रो रही थी। लुट गए बर्बाद हो गए अब क्या होगा। उसे मालूम पड़ा बाबू जी से गहना बनाते समय सोने की बिस्किट पीट रहे थे। बिस्किट उछल कर बाहर चली गई फिर ना मिली। सुनार ने नौकरी से निकाल दिया तथा हर्जाना भी मांगा। रोजगार छिन गया अब क्या करें। रंजना ने पढ़ाई बंद कर दी। मां बीमार रहने लगी और घुट घुट कर एक दिन हम लोग को छोड़ कर चली गई। मां के निधन से बाबूजी टूट गए। और हम लोग गांव आ गए और वही पर वह सुनार के यहां काम करने लगे। बावूजी को मेरी शादी की चिन्ता खाये जा रही थी। बिना दहेज लड़का कहॉ मिले। रिश्तेदारो के कहने पर अखबार में विज्ञापन दिया। विज्ञापन निकलने के 1 हफ्ते के भीतर पीयूष अपने दो दोस्तों को लेकर आया तथा मुझे पसंद कर लिया शादी तय हो गई। पीयूष ने बाबूजी को बताया वह सरकारी मुलाजिम है खाद्य विभाग में। अकेला है ना कोई आगे है और ना कोई पीछे। तारीख के दिन आया और मंदिर में हमारी शादी हो गई और मैं दिल्ली आ गई। हर लड़की के सपने होते हैं वैसे ही मेरे सपने भी थे। कमरा खुलते ही जो मैंने

देखा लगा आसमान फट पड़ा। लगता था महीनों से झाड़ू नहीं लगी खाली बोतलें झूठे बर्तन सभी इधर उधर पड़े थे। कहने लगा मैं तो सोच रहा था तेरा बाप रुपए देगा एक ही लड़की है। सीधे आकर होटल में रुकेंगे रूम बुक भी कराया था मगर अब पैसा कौन भरे साले भीख मांगे कि लड़की ले आया धोखे से। सफाई कर लेते हैं। नई दुल्हन मुंह दिखाई की जगह झाड़ू लगा रही थी। सफाई कर सोने की जगह बनायी। खाना बाजार से आया। सुबह होते ही पीयूष चले गए काम से जा रहा हूं। उधारी लेने वालों का सिलसिला शुरू हुआ। गाली गलौज मारने की धमकी सब कुछ सुना। यह क्या दिमाग काम नहीं कर रहा था। ड्राई क्लीनर्स के यहां से आदमी आया और वह शादी का सूट लेकर चला गया बोला किराए पर लाए थे। इतना बड़ा धोखा। रात को पियूष लौटे। पिये हुए। पूछा तो,,' कहने लगे तुम ,कौन होती हो पूछने वाली जैसे रखूं वैसे रहो ज्यादा बोलोगी तो जवान खींच लूंगा। कर दे अपने बाप को, खबर रुपए भेजें नहीं तो लड़की ले जा

धीरे-धीरे प्याज के छिलके की तरह परत उतरती गई।नशा खोर और जुआरी।

सोचा गांव चली जाऊं पता लगाया पिताजी वृद्धा आश्रम चले गए। अब रोज का काम पिटती रही, सहती रही। जाऊं तो कहां।

काम करना शुरू कर दिया मोहल्ले के बच्चे स्कूल ले जाती और लाती। बर्तन मॉजती तब रोटी मिलती।

इसी बीच दो बार गर्भ से हुई। एबॉर्शन करा दिया, बच्चा नहीं चाहिए। नीलम जब गर्भ में आई। पीयूष को बताया नहीं। समय जब ज्यादा हो गया तब वह अपना काम न कर सका। नीलम उसे फूटी आंख नहीं सुहाती थी।

दो तीन बार कहां बाप से जाकर पैसे ला।मै समझा अकेली बेटी है पैसा मिलेगा लेकिन वह तो खुद भीख मंगा है।

जीवन भारी लगने लगा लेकिन नीलम की ममता मुझे कुछ करने से रोक लेती। धीरे-धीरे मालूम पड़ गया की थी उसकी मां है नेपाल के एक गांव में रहती हैं। वही का है पीयूष गांव में किसी लड़की को छेड़ा तो गांव वालों ने मार कर भगा दिया। गांव में घुसा तो जिंदा नहीं बचेगा। दिल्ली भाग आया और यहां करने लगा धोखा तथा छल।

उस दिन तो जैसे पहाड़ टूट पड़ा पीयूष से गलती से मोबाइल घर पर ही छूट गया। रिंग बजी मोबाइल उठाया उधर से आवाज आई सुनो जी,, आप आ रहे हो कि मैं आऊं मुन्नी बीमार है'

मैं समझी रॉन्ग नंबर है मैंने पूछा आप कौन बोल रही हैं किससे काम है। उधर से उत्तर आया पीयूष जी से काम है मैं उनकी पत्नी बोल रही हूं। वह कहां हैं आप कौन हो?। लगा किसी ने खोलता हुआ लावा कान में डाल दिया मोबाइल ऑफ कर दिया आगे सुनने की हिम्मत न थी।

रात को पियूष घर लौटा पूछा तो उबल पड़ा मेरा मोबाइल छुआ क्यों तुम कौन प्रश्न करने वाली'' ।मै तुम्हारी पत्नी हूँ मेरा अधिकार है।रंजना ने कहा

मैं देता हूँ अधिकार हाथ पकड़कर घर से निकल दिया दरवाजा बन्द कर लिया।रात का समय कहॉ जाऊं ले जा इस औलाद को नीलम को बाहर भेज दिया।उसी।समय एक बूढ़ी माँ घर के बगल सेनिकली बेटी मैने सब सुनलिया भगवान किसीको नालायक औलाद न दें,चल मेरे साथ मै गाँव आगयी नीलम केसाथ सारी घटना रंजनाने सास को बता दी। घर के पीछे जमीन का टुकडा था।सब्जी करने लगीं।बीए सेकंड ईयर पास किया था। गांव की बच्चियों को पढ़ाने लगी। नीलम को सरकारी स्कूल में भर्ती कर दिया।

तभी नीलम ने आवाज दी।रंजना की तन्द्रा टूटी वर्तमान में लौट आयी।माँ जी सोई नही थी ,रंजना ने पूछा माँजी जाग रही हो।क्या बात है कुध नही बेटा जैसे तुझे नींद नही आरही वैसे मुझे।

भगवान बे औलाद रखे ऐसी औलदकिसी का नादे।

रंजना सास के पास बैठ गयी।एक बात पूँछू बतायेगी आप दिल्ली कैसे पहुँचीआपके पास पता कहाँ सेआया।

'माँजी बोली गॉव का रामू दिल्ली में साब केघर रवाना बनाता है वह सारे समाचार देता था।उसी के साथ गयी अब सुधरगया होगा यह सोच कर

ममता खींच ले गयी नातिन की।

हे भगवान औलाद हो तो सुपात्र।नही बांझ भली।

रंजना बोली मैं आपका बेटा हूं यह समझ लीजिए मैं करूंगी आपकी सेवा '

बेटा परसों दीपावली है हम धूमधाम से मनाएंगे'

सास ने कहा

मगर माँजी पैसे कहां हैं बच्चों ने भी दिवाली के बाद पैसा देने के लिए कहा है रंजना बोली

' मेरे पास हैं यह कह कर वह उठी और एक डिब्बी रंजना के हाथ पर रख दी।

' माँजी इसमें तो एक अंगूठी है'

हां इसे तू बेच दे तुम्हारे ससुर जी ने मुंह दिखाई दी थी

मैं अपनी नातिन की दिवाली धूमधाम से मनाऊंगी'

रंजना कुछ बोल ना सकी चुप हो गई इसके अलावा कोई दूसरा चारा भी ना था।

वह कहने लगी मैं निराश्रित नहीं मेरा अपना घर है अपनी मां है और अपनी सास के गले लिपट गई दोनों की आंखों से आंसू बह रहे थे।

दही का सही उपयोग

कभी भी आप दही को नमक के साथ मत खाईये. दही को अगर खाना ही है, तो हमेशा दही को मीठी चीज़ों के साथ खाना चाहिए, जैसे कि चीनी के साथ, गुड के साथ, बूरे के साथ आदि!

इस क्रिया को और बेहतर से समझने के लिए आपको बाज़ार जाकर किसी भी साइंटिफिक इंस्ट्रूमेंट की दूकान पर जाना है, और वहां से आपको एक लेंस खरीदना है, अब अगर आप दही में इस लेंस से देखेंगे तो आपको छोटे–छोटे हजारों बैक्टीरिया नज़र आएंगे!

ये बैक्टीरिया जीवित अवस्था में आपको इधर–उधर चलते फिरते नजर आएंगे. ये बैक्टीरिया जीवित अवस्था में ही हमारे शरीर में जाने चाहिए, क्योंकि जब हम दही खाते हैं तो हमारे अंदर एंजाइम प्रोसेस अच्छे से चलता है !

हम दही केवल बैक्टीरिया के लिए खाते हैं !

दही को आयुर्वेद की भाषा में जीवाणुओं का घर माना जाता है, अगर एक कप दही में आप जीवाणुओं की गिनती करेंगे तो करोड़ों जीवाणु नजर आएंगे !

अगर आप मीठा दही खायेंगे तो ये बैक्टीरिया आपके लिए काफ़ी फायदेमंद साबित होंगे! वहीं अगर आप दही में एक चुटकी नमक भी मिला लें तो एक मिनट में सारे बैक्टीरिया मर जायेंगे ! और उनकी लाश ही हमारे अंदर जाएगी जो कि किसी काम नहीं आएगी ! अगर आप 100 किलो दही में एक चुटकी नामक डालेंगे तो दही के सारे बैक्टीरियल गुण खत्म हो जायेंगे क्योंकि नमक में जो केमिकल्स है वह जीवाणुओं के दुश्मन है !

आयुर्वेद में कहा गया है कि दही में ऐसी चीज़ मिलाएं, जो कि जीवाणुओं को बढाये ना कि उन्हें मारे या खत्म करे! दही को गुड़ के साथ खाईये, गुड़ डालते ही जीवाणुओं की संख्या मल्टीप्लाई हो जाती है और वह एक करोड़ से दो करोड़ हो जाते हैं थोड़ी देर गुड मिला कर रख दीजिए !

बूरा डालकर भी दही में जीवाणुओं की ग्रोथ कई गुना ज्यादा हो जाती है !

मिश्री को अगर दही में डाला जाये तो ये सोने पर सुहागे का काम करेगी !

भगवान कृष्ण भी दही को मिश्री के साथ ही खाते थे !

पुराने समय के लोग अक्सर दही में गुड़ डाल कर दिया करते थे!

प्राथमिक पंजीकरण प्रारूप

नामांकन क्रमांक - --

नाम - --

पिता का नाम - --

पता/शहर का नाम - --

मूल निवास - --

संपर्क नम्बर - --

आगमन दिनाँक - --

समय - --

साथ आने वाले परिजनों की संख्या - --

गया श्राद्ध पद्धति

गया में पिण्डदान करने से पुत्र की प्राप्ति तथा पितरों का उद्धार गया में पिण्डदान करनेकी महिमा के सम्बन्ध में एक आख्यान प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है– विशाला नगरी में विशाल नाम के एक राजा हुए। उन्हें कोई सन्तान नहीं थी। दुःखित राजा ने ब्राह्मणों से पूछा कि मुझे पुत्रादि की प्राप्ति किस प्रकार होगी ? ब्राह्मणों ने कहा–राजन्! गया में पिण्डदान करने से आपको सन्तति की प्राप्ति होगी। राजा ने गया जाकर गयाशिर में पिण्डदान किया तो उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। पिण्डदान के अनन्तर राजा को आकाश में रक्तवर्ण, श्वेतवर्ण तथा कृष्णवर्ण वाले तीन पुरुष दिखायी दिये। राजा ने उनसे पूछा–आप लोग कौन हैं? इस पर श्वेतवर्ण वाले पुरुषने कहा– मैं तुम्हारा पिता हूँ, इन्द्रलोकसे यहाँ आया हूँ। पुत्र। ये रक्तवर्णवाले हमारे पिता हैं, जो ब्रह्महत्याके पाप का कष्ट भोग रहे हैं और ये तीसरे कृष्णवर्ण वाले हमारे पितामह हैं, इन्होंने बहुत ऋषियोंका वध किया है– ये दोनों अवीची नामक नरक में दुःख भोग रहे हैं। हे शत्रुकुलनाशक ! 'मैं अपने पिता, पितामह एवं प्रपितामह लोगोंको सन्तुष्ट कर रहा हूँ'– ऐसा संकल्पकर हमारे निमित्त तुमने जो जलदान किया है, उसी के प्रभाव से हम तीनों ही एक साथ मुक्त हो गये हैं। हे श्रेष्ठ पुत्र! तुमने हम सबको दुःखसे उबार लिया, अब हमलोग परम सन्तुष्ट होकर उत्तम स्वर्ग जा रहे हैं–मुक्तिः कृता त्वया पुत्र व्रजामः स्वर्गमुत्तमम्।

पितरों ने यह भी बताया कि पुत्रों को इसी प्रकार अपने पितरोंकी मुक्तिके लिये उपाय करना चाहिये एवं पुत्रैः पितृणां च कर्तव्या मुक्तिरुत्तमा। पितरों से आशीर्वाद प्राप्तकर अन्त में राजा विशाल ने वैकुण्ठलोक प्राप्त किया।

गया श्राद्ध से प्रेतयोनि से मुक्ति : वायुपुराण आदि कई पुराणों में आया है कि किसी प्रेतने एक वैश्य से कहा कि 'आप मेरे नामसे गयाशिरमें पिण्डदान कर दें, इससे हमारी प्रेतयोनि से मुक्ति हो जायगी। मेरा सम्पूर्ण धन आप ले लें और उसे लेकर मेरे उद्देश्यसे गयाश्राद्ध कर दें। इसके बदले में मैं अपनी सम्पत्तिका छठा अंश आपको पारिश्रमिक के रूप में दे रहा हूँ। मैं आपको अपना नाम–गोत्रादि भी बता रहा हूँ।' प्रेतके अनुरोध पर उस वणिक् ने गया की यात्रा की और गयाशिर में जाकर उस प्रेत के निमित्त पिण्ड प्रदान किया और उसके बाद अपने पितरोंका भी पिण्डदान किया। पिण्डदान के प्रभाव से वह प्रेत प्रेतयोनि से मुक्त हो गया– 'प्रेतः प्रेतत्वनिर्मुक्तः'

इसलिये कहा गया है कि गयाशिर में जाकर जिन–जिनके नाम से मनुष्य पिण्डदान करता है, वे यदि नरक में हैं तो स्वर्ग पहुँच जाते हैं और स्वर्ग में हैं तो मुक्ति प्राप्त करते हैं–

गयाशिरसि यः पिण्डान्येषां नाम्ना तु निर्वपेत।
नरकस्था दिवं यान्ति स्वर्गस्था मोक्षमाप्नुयुः ॥

गया के नामकरण में गयासुर की कथा

पुराणों में गया सुर की कथा विस्तार से आयी है और यह बताया गया है कि गया सुर के नाम पर ही इस तीर्थ का 'गया' नाम पड़ा। कथा के अनुसार प्राचीनकाल में 'गय' नामक एक असुर था, वह भगवान् विष्णु का परम भक्त था। उसने कोलाहल नामक पर्वत पर हजारों वर्षों तक तप किया और अपने तपोबल के प्रभाव से वह देवताओं के लिये भी अजेय हो गया। चिन्तित हो देवगण भगवान् विष्णु के पास पहुँचे। भगवान् विष्णुने कहा–सभी देवता गया सुर के पास चलें। वहाँ पहुँचने पर विष्णुजी ने उससे कठिन तप का कारण पूछा और वर माँगने के लिये कहा–इसपर गयासुर ने कहा–देव। वह सभी देवताओं, ऋषियों, मुनियों से भी अधिक पवित्र हो जाय। सभी ने 'तथास्तु' कहा। गयासुर प्रसन्न हो तपसे विरत हो गया। वरदानके प्रभावसे गयासुर की देह अत्यन्त पवित्र हो गयी, जो भी उसे देखता अथवा उसकी देह का स्पर्श करता, स्वर्ग चला जाता। यह देख ब्रह्माजी बड़े चिन्तित हो गये। उनका विधान तथा मर्यादा टूटने लगी। तब भगवान् विष्णु ने ब्रह्माजी से कहा–आप गयासुर के पास जाकर यज्ञ करने के लिये यज्ञभूमि के रूपमें उसका पवित्र शरीर माँग लें। ब्रह्माजी गयासुर के पास गये।

उनका दर्शन कर गयासुर बोला–ब्रह्मन्! आज मेरा जन्म सफल हुआ। आपके दर्शन से मैं कृतार्थ हुआ, आप मेरे अतिथि बने, यह मेरे लिये सौभाग्य की बात है, आप अपने आने का प्रयोजन बतायें। तब ब्रह्माजी ने कहा– महाभाग गयासुर! समस्त पृथ्वीमें भ्रमण कर मैंने जिन–जिन तीर्थों को देखा है, यज्ञ के लिये वे तुम्हारी देहसे कम ही पवित्र हैं। अतः तुम्हारी देह के समान अन्य कोई पवित्रतम स्थान नहीं है। भगवान् विष्णु के वरसे तुम्हारी देष्ट सर्वाधिक पावन हो गयी है, अतः मुझे यज्ञ करने के लिये तुम अपने शरीर का दान कर दो। गयासुर बोला– हे देव, देवेश! आप हमारे शरीर के लिये प्रार्थना कर रहे हैं, यह हमारा धन्यभाग है, आप जैसे चाहें वैसे यज्ञ करें, यह शरीर तो आपकी ही रचना है।

यह कहते हुए गया सुर ने सहर्ष अपनी देह समर्पित कर दी। विराट् शरीर वाला गयासुर उत्तर की और सिर तथा दक्षिण की ओर पैर करके वहीं भूमि पर सो गया। ब्रह्माजीने यज्ञकी सारी सामग्रियाँ तैयार की और उसकी देह के ऊपर यज्ञानुष्ठान होने लगा, किंतु गयासुर का शरीर हिलने लगा। ब्रह्माजी ने धर्म से कहकर पवित्र धर्मशिला उसके शरीरपर रखवायी, फिर भी शरीर हिलता रहा। तब ब्रह्माजी ने तथा देवताओं ने अपनी।

गया यात्रा सम्बन्धी जानने योग्य आवश्यक बातें

श्रीगया धाम की यात्रा एक विशिष्ट महोत्सव है। यह यात्रा पितरोंके कल्याणके लिये की जाती है। श्रीगया तीर्थक यात्रार्थी को चाहिये कि तीर्थयात्रा का अधिकारी बनने के लिये वह सर्वप्रथम किसी दैवज्ञसे गया यात्रा का मुहूर्त ज्ञात कर ले तथा यात्रा प्रारम्भ करने के तीन दिन पूर्व अत्यन्त संयम-नियमपूर्वक रहे।

प्रथम दिन एक समय भोजन करना चाहिये तथा दूसरे दिन हविष्यान (चावल, गेहूँ, जौ, मूंग, तिल आदि पवित्र अन्न तथा दूध, दही, घी आदि गव्य पदार्थ) ग्रहण करना चाहिये और तीसरे दिन उपवास करना चाहिये। चौथे दिन प्रातः स्नान-सन्ध्यादि नित्यकर्म करके पूजाकी सामग्री एकत्रितकर आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन-प्राणायाम करके गया यात्रा की निर्विघ्न-परिपूर्णता की सिद्धि के लिये स्वस्ति-पुण्याहवाचनपूर्वक गणेशाम्बिका तथा अपने इष्टदेवताका स्मरण-पूजन करना चाहिये। पूजन के अनन्तर घर में गया तीर्थ यात्रांगभूत पार्वणविधिसे प्रचुर घृत मिश्रित हविष्यान्न से घृत श्राद्ध करना चाहिये। इससे कार्यारम्भ * (यात्रारम्भ) हो जाता है। इसके बाद यदि कोई जननाशौच या मरणाशौच आ जाता है तो अशौच प्रवृत्त नहीं होता-

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे।
प्रारब्धे सूतकं न स्यात अनारब्धे तु सूतकम्।।

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें विष्णु पुराण का वचन) घृत श्राद्ध के अनन्तर ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये और उनसे तथा गुरुजनों एवं मित्रों से गया यात्राके लिये आज्ञा प्राप्तकर गयायात्रा का संकल्प करना चाहिये। किसी दोने में धुले हुए चावल में पंचगव्य मिलाकर रख ले और गीत वाद्यके साथ उन्हों

अक्षतोंको छींटते हुए ईशानकोण से ईशानकोण तक गाँव की प्रदक्षिणा करनी चाहिये- 'ग्रामप्रदक्षिणा कार्या गीतवाद्यसमन्वितः।'

ग्राम की प्रदक्षिणा असम्भव हो तो घर की ही प्रदक्षिणा करनी चाहिये अथवा अपने ही स्थानपर प्रदक्षिणा कर ले। तदनन्तर अन्य अक्षतों को लेकर पितरों का आवाहन करना चाहिये। पितरोंके आवाहनके मन्त्र आगे प्रयोग में दिये गये हैं। पितरों के आवाहित किये हुए अक्षतों को बाँधकर या सच्छिद्र गरीगोले में रखकर गया यात्रा में साथ ले जाना चाहिये और गयाकूप में अथवा धर्मारण्य में डाल देना चाहिये। पितरों के आवाहन के बाद एक या तीन ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये या निष्क्रय-द्रव्य देना चाहिये और घरसे प्रस्थान करना चाहिये। श्राद्ध से बचे हुए घृतबहुल हविष्यान्न को साथ में ले ले। कुछ दूर जाकर किसी देवालय, धर्मशाला आदिमें टिक जाय। यहाँ साथ में लाये हुए श्राद्ध से बचे हुए घृतबहुल हविष्यान्न से पारणा करे। अगले दिन नित्यकर्म करके पुनः तीर्थयात्रा का वेष धारण करना चाहिये। काषाय वस्त्र धारण कर ले अथवा वस्त्रका एक कोना गैरिक रंगसे रँग लेना चाहिये। ये वस्त्र केवल यात्रामें ही धारण करने चाहिये। अन्य कार्यों में श्वेत वस्त्र धारण करे।

वायुपुराण में यात्रा का नियम बताया गया है कि विधिपूर्वक श्राद्ध सम्पन्न कर जो व्यक्ति गया यात्रा के लिये उद्यत हो, उसे चाहिये कि सर्वप्रथम श्राद्धकर का षाय वस्त्र धारण कर अपने ग्राम की प्रदक्षिणा करे, फिर दूसरे ग्राम में जाकर श्राद्ध से शेष अन्नका भक्षण करे। दानादि न लेते हुए प्रतिदिन यात्रा करे। प्रति ग्रह से बचते हुए संतुष्टचित्त होकर इन्द्रियों को वश में करके पवित्र मन एवं शरीर से अहंकारादि को छोड़कर जो गया की यात्रा करता है, वह तीर्थ का वास्तविक फल प्राप्त करता है-

उद्यतश्चेद् गयां गन्तुं श्राद्धं कृत्वा विधानतः।
विधाय कार्पटीवेषं कृत्वा ग्रामप्रदक्षिणम् ॥
ततो ग्रामान्तरं गत्वा श्राद्धशेषस्य भोजनम।
ततः प्रतिदिनं गच्छेत प्रतिग्रहविवर्जितः।।
प्रतिग्रहादुपावृत्तः सन्तुष्टो नियतः शुचिः।
अहंकारविमुक्तो यः स तीर्थफलमश्नुते॥

गया यात्री को चाहिये कि वह -

(१) यात्राके समय दूसरेका कुछ न खाय। (२) दान भी न ले।
(३) एक समय भोजन करे।
(४) यात्रा के समय भगवान् दामोदर, गदाधर, फल्गुगंगा का स्मरण करता रहे।
(५) असत्यभाषण, कटुभाषण न करे और किसी की निन्दा न करे।
६) छल, कपट, चोरी, धोखा और विश्वासघात न करे।
(७) रास्ते में कोई तीर्थ पड़ जाय तो यथासम्भव वहाँ पार्वणविधि से अथवा तीर्थ श्राद्ध विधि से श्राद्ध करते हुए आगे बढ़े।

कुछ लोग काशी में पिशाच मोचन में त्रिपिण्डी श्राद्ध करके यात्रा करते हैं तथा कुछ लोग प्रयागमें त्रिवेणीसंगमपर श्राद्धकर प्रस्थान करते हैं।

(८) गया यात्री को अपने अन्य सम्बन्धियों तथा सम्पर्कियों के नाम, गोत्र इत्यादि भी लिखकर ले जाने चाहिये ताकि वह वहाँ उनके नामसे तर्पण एवं पिण्डदान कर सके।
(९) मार्ग में पुनःपुनः तीर्थ में पहुँचकर तीर्थको प्रणाम करे तथा निम्न मन्त्रों से पितरों का आवाहन करना चाहिये-

पुनःपुनेति विख्याता पितृणां तीर्थमुत्तमम।
अस्मत्कुले मृता ये च आगच्छन्तु पुनः पुनाम।।

संविधान संशोधन समिति

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की संविधान संशोधन समिति का गठन निम्न प्रकार से किया गया है।

1- श्रीमती उषा चतुर्वेदी सभापति
2- डॉ श्री प्रदीप चतुर्वेदी पूर्व सभापति
3- श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी कार्यवाहक सचिव
4- श्री शशांक चतुर्वेदी संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका

यह समिति अपनी रिपोर्ट 31मई को प्रस्तुत करेगी
संशोधन

संविधान संशोधन आमंत्रित है 20 मई तक संशोधन स्पष्ट अक्षरों में टाइप या लिखित में सभापति अथवा कार्यकारी सचिव को प्रेषित करें।

– **श्रीमती उषा चतुर्वेदी,** सभापति

समाज समाचार

- अपनी पुत्री सुरुभि द्वारा सिएटल अमेरिका में नये मकान क्रय करने के उपरांत गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में श्री ऋषिकेश जी चतुर्वेदी (तरसोख़र/नोएडा) द्वारा श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा सहायता हेतु सहयोग – रुपए 5100/ (2031/24)
- आगामी महासभा अधिवेशन दिनांक 15 एवं 16 जून 2024 को भोपाल में होना निश्चित हुआ है। भोपाल की शाखा सभा द्वारा प्रस्ताव पारित किया गया एवं आगामी अधिवेशन की व्यवस्थाओं हेतु विभिन्न समितियां का गठन किया गया। बैठक का आयोजन भोपाल शाखा सभा के अध्यक्ष श्री सुमंत जी के निवास पर हुआ। जिसमें समस्त पदाधिकारी एवं कार्य कारणी के सदस्य उपस्थित हुए।

भोपाल शाखा सभा की समस्त कार्यकारिणी

छपते - छपते

अखिल भारतीय श्री माथुर चतुर्वेदी सभा ने

लांगुरिया गायन के कार्यक्रम में की शत प्रतिशत मतदान की अपील की

दीनबन्धु ■ इंदौर।
www.dinbandhunews.com

माथुर चतुर्वेदी महासभा एवं भोपाल चतुर्वेदी गुइयों के तत्वाधान में। लांगुरिया लोकगीत के गायन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इनमें मुख्य से माता के लोकगीत लांगुरिया का गायन किया गया। चतुर्वेदी समाज द्वारा इस तरह समाज की सांस्कृतिक धरोहरों को संवर्धित, संयोजित करने का कार्य किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन समाज की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी द्वारा किया गया।
संचालन में उनका सहयोग भोपाल की चतुर्वेदी महिलाओं के व्हाट्सएप समूह के श्रीमती शिवांगी चतुर्वेदी द्वारा किया गया। श्रीमती उषा चतुर्वेदी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ने अपने उद्बोधन में शतप्रतिशत अपने मताधिकार का प्रयोग करने का आह्वान किया। तथा लोकतंत्र के इस महायज्ञ में मतपत्र की समिधा डालकर पुण्य लाभ प्राप्त करने का आवाहन किया। कोई भी बहन मतदान करने से वंचित न रह जाए उसे साथ ले जाने का आवाहन भी किया।
कार्यक्रम का आभार महासभा के राष्ट्रीय मंत्री श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी द्वारा किया। कार्यक्रम में महासभा के संरक्षक श्री भरत चतुर्वेदी, समाज की मासिक पत्रिका के संपादक श्री शशांक चतुर्वेदी, महासभा के कोषाध्यक्ष श्री महेश चतुर्वेदी विशेष रूप उपस्थित थे। समाज की महिलाओं ने इस बढ़चढ़ की हिस्सेदारी की गई। इसमें छोटी सी बेटी सुश्री वृन्दा (कटनी) ने गायन के साथ वादन का कार्य बड़ी तन्मयता से एकाग्रचित्तता से किया गया। कार्यक्रम के गायन में चित्रा जी, शिवांगी जी, शालिनी जी, पदमरेखा जी, विनीता जी, बबीता जी, नीता जी व आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम में 12 राज्यों व 45 शहरों से बहनों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। यह कार्यक्रम आन लाइन गूगल मीट पर आयोजित किया गया था।

अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महासभा ने जनता से की मतदान प्रतिशत बढ़ाने की अपील

लांगुरिया गायन के कार्यक्रम में मां दुर्गे के लोकगीत का गायन

सत्र प्रतिनिधि || भोपाल

माथुर चतुर्वेदी महासभा एवं भोपाल चतुर्वेदी गुइयां के तत्वावधान में लांगुरिया लोकगीत के गायन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम मुख्य रूप से माता दुर्गा के लोकगीत लांगुरिया का गायन किया गया। चतुर्वेदी समाज द्वारा इस तरह समाज की सांस्कृतिक धरोहरों को संवर्धित, संयोजित करने का कार्य किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन समाज की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी द्वारा किया गया। संचालन में उनका सहयोग भोपाल की चतुर्वेदी महिलाओं के व्हाट्सएप समूह के श्रीमती शिवांगी चतुर्वेदी द्वारा किया गया।
इस मौके पर उषा चतुर्वेदी राष्ट्रीय अध्यक्ष, माथुर चतुर्वेदी महासभा को संबोधित करते हुए शत-प्रतिशत अपने मताधिकार का प्रयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने लोकतंत्र के इस महायज्ञ में मतपत्र की आहुति डालकर पुण्य लाभ प्राप्त करने का आह्वान किया। कोई भी बहन मतदान करने से वंचित न रह जाए, उन्होंने मतदाता भाइयों से उन्हें भी साथ ले जाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का आभार महासभा के राष्ट्रीय मंत्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी द्वारा किया। कार्यक्रम में महासभा के संरक्षक भरत चतुर्वेदी, समाज की मासिक पत्रिका के संपादक शशांक चतुर्वेदी, महासभा के कोषाध्यक्ष महेश चतुर्वेदी विशेष रूप उपस्थित थे। समाज की महिलाओं ने इस बढ़ चढ़कर हिस्सेदारी की। इसमें छोटी सी बेटी सुश्री वृन्दा (कटनी) ने गायन के साथ वादन का कार्य बड़ी तन्मयता से एकाग्रचित होकर के किया गया। कार्यक्रम के गायन में चित्रा, शिवांगी, शालिनी, पदमरेखा, विनीता, बबीता, नीता आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम में 12 राज्यों व 45 शहरों से बहनों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। यह कार्यक्रम ऑनलाइन गूगल मीट पर आयोजित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में मां दुर्गे मां की आरती कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

बिछड़े स्वजन

* श्री अशोक भाईसाहब @बच्चू पुत्र स्व. अमरनाथ चतुर्वेदी (कमतरी/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 10/04/2024 को प्रातः 5 बजे कानपुर निवास पर हो गया।
* श्री रमाकांतजी (लखनऊ/कायमगंज) का स्वर्गवास 94 वर्ष की आयु में दिनाँक 11 अप्रैल 2024 को लखनऊ में हो गया।
* श्री ध्रुव किशोर चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री रूप किशोर चतुर्वेदी (फर्रुखाबाद) का कल रात्रि दिनाँक 12/04/2014 को स्वर्गवास हो गया।
* श्रीमती मीनाक्षी गौतम चतुर्वेदी (चंद्रपुर/ तरसोखर/मुंबई) का अचानक देहांत 5 अप्रैल 2024 को भोपाल में हो गया है।
* श्री कौशल किशोर चतुर्वेदी (पप्पू) पुत्र स्वर्गीय जयकिशन जी चतुर्वेदी (होलीपुरा/कलकत्ता) का दिनाँक 20/04/2024 को दिल्ली में निधन हो गया।
* ब्रिगेडियर श्री प्रभाष चंद्र चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय श्री श्याम सुंदर पांडे (होलीपुरा/अहमदाबाद) का कल शाम दिनाँक 20/04/24 को स्वर्गवास हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय होली मिलन कार्यक्रम मुंबई

(र.क्र. 2182)

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा होली मिलन कार्यक्रम नोएडा

(र.क्र. 2177)

पुण्य स्मरण

स्व. श्रीमती रूपवती चतुर्वेदी

स्व. श्री राजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

स्व. श्रीमती वीना चतुर्वेदी
स्व. श्री मृदुलकांत चतुर्वेदी

स्व. श्री प्यारेलाल चतुर्वेदी

श्रद्धानवत

मनीष – संध्या
(पुत्र – पुत्रवधू)

मुकुल (पुत्र)
नाती – वंश, कृष्णा

मिनाक्षी – विनोद
मंजूषा – राहुल
(पुत्री – दामाद)

पता : मनीष चतुर्वेदी (होलीपुरा / आगरा)
नि.बी. 769, ट्रांस यमुना कॉलोनी, आगरा
मो. – 7983344829

(र.क्र. 2172)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' मई 2024

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

कानपुर

बैंगलूरू

गाजियाबाद

भोपाल

लखनऊ

गुरूग्राम

फरीदाबाद

बरेली